साहिर लुध्यानवी

गाता जाये बंजारा

(गीत)

गाता जाये बंजारा

उन सभी कलाकारों के नाम—
जिन्होंने इन गीतों के लिए अपनी आवाज़ें,
अपनी धुनें और अपने चेहरे दिये !

—साहिर

भूमिका

'गाता जाये बंजारा' फ़िल्म के लिए लिखे गए गीतों का सकलन है। इसमे शक नही कि इस संकलन मे कुछ ऐसे गीत भी सम्मिलित हैं, जो रेडियो या ग्रामोफ़ोन रिकार्डों के लिए लिखे गए। मगर चूँकि इनकी सख्या सीमित है, इसलिए मैं इनके बारे में बहस नही करूंगा। सिर्फ़ फ़िल्मी-गीत-लेखन पर ही राय दूगा।

फ़िल्म हमारे युग का सबसे प्रभावकारी तथा उपयोगी माध्यम है जिसे अगर रचनात्मक तथा प्रचारात्मक दृष्टिकोण से अपनाया जाए तो जनता के जीवन-स्तर और सामाजिक प्रगति की रफ्तार को बहुत तेज़ किया जा सकता है। दुर्भाग्य से हमारे यहाँ अभी तक फ़िल्म के इस पहलू की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि यह दायित्व अभी तक प्राय ऐसे लोगो के हाथो मे है जो निजी लाभ को सामाजिक दायित्व से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए हमारी फ़िल्मी कहानियाँ, फ़िल्मी धुनो और फ़िल्मी गीतो का स्तर प्राय: निम्न होता है और शायद इसीलिये साहित्यिक क्षत्र में फ़िल्मी साहित्य को घृणा की दृष्टि से देखा जाता है।

मैं उनके इस रवैये पर आपत्ति नही करता—बल्कि सच पूछा जाय तो उनकी कई बातों से मैं स्वय भी सहमत हूँ। किन्तु कुछ आपत्तियाँ ऐसी हैं जो या तो उनके बढते हुए कट्टरपन की उत्पत्ति है या फिर किसी अज्ञानता के कारण। इस प्रकार की आलोचना से न पाठक या दर्शक को ही कोई लाभ पहुँचता है और न किसी गीतकार को।

मेरा सम्बन्ध चूंकि फ़िल्म और साहित्य दोनों से है अत: मैं अपने साहित्यकार सहयोगियो की सूचना के लिये यहां कुछ बाते कहना आवश्यक समझता हूँ।

फ़िल्मी गीतकार को वह स्वतन्त्रता प्राप्त नही होती जो एक साहित्यिक कवि को मिलती है। गीतकार को हर स्थिति में ड्रामे की सीमा से प्रभावित रहना पड़ता है और पात्रो के मानसिक स्तर के अनुसार शब्दों और विचारो का चुनाव करना पड़ता है—बिलकुल इस प्रकार जैसे एक सवाद लेखक को एक ही ड्रामे में नास्तिक और आस्तिक, मालिक और नौकर, शरीफ और बदमाश—सभी प्रकार के पात्रों का प्रतिनिधित्व करना पड़ता है। इसी प्रकार गीतकार के

लये भी आवश्यक होता है कि वह पात्रों और कथानक के अनुरूप सभी प्रकार के विचारों और भावनाओं को एक जैसी दृढ़ता के साथ प्रकट करे।

यह बात साहित्यिक शायरी से भिन्न भी है और कठिन भी है। अतः समालोचक के लिये यह आवश्यक है कि जब वह फिल्मी गीतों की समालोचना करें तो केवल यही न देखें कि अमुक गीत किस कवि ने लिखा है बल्कि इस बात को भी ध्यान में रखें कि वह किस पात्र के लिये लिखा गया। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि फ़िल्मी गीत प्रायः बनी-बनाई धुनों पर लिखे जाते हैं। हमारे यहाँ क्योंकि अभी तक संगीत का 'कापी राईट' नहीं हैं इसलिये फ़िल्मी संगीत में विदेशी धुनों का प्रयोग पर्याप्त किया जाता है। इसका निश्चित परिणाम यह होता है कि कवि को कई बार कविता की प्रचलित छन्द रीतियों से हटना पड़ता है और कई बार शाब्दिक मूल्यों को भूलकर ध्वनि अनुकूलता पर सन्तोष करना पड़ता है।

शब्दों के चुनाव में भी उसे इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि देश के दूरस्थ अंचलों में बसने वाले लोग, जिनमें प्रायः अनपढ़ लोगों की संख्या अधिक होती है और जिनकी भाषा उर्दू या हिन्दी नहीं है, भी उन गीतों के अर्थ समझ सकें।

स्पष्ट है इन बन्धनों के कारण जो काव्य-साहित्य लिखा जायेगा वह कला की उन ऊंचाइयों को स्पर्श नहीं कर सकेगा जो अच्छे साहित्य का भाग है। फिर भी इस माध्यम के महत्व और आवश्यकता को भुलाया नहीं जा सकता। इसका अपना क्षेत्र है जो पुस्तकों, पत्रिकाओं, रेडियो और नाटक से अधिक बड़ा है और इसके द्वारा हम अपनी बात कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

मेरा सदैव यह प्रयास रहा है कि यथा संभव फिल्मी गीतों को सृजनात्मक काव्य के निकट ला सकूँ और इस प्रकार नये सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोण को जन-साधारण तक पहुँचा सकूँ।

जहाँ तक इस संकलन के गीतों की लोकप्रियता का सम्बन्ध है इनमें से प्रायः की गणना अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय गीतों में होती है। किन्तु मेरे निकट कलात्मक रचना की लोकप्रियता ही सब कुछ नहीं। यदि इस संकलन से आप महसूस करें कि ये गीत आपके मनोरंजन की सामग्री प्रस्तुत करने के साथ-साथ आपकी राजनैतिक, सामाजिक और साहित्यक रुचि की भी सन्तुष्टि करते हैं तो मैं समझूंगा कि मेरा प्रयास असफल नहीं गया।

बंबई, २३ मार्च १९७४ —साहिर लुध्यानवी

अनुक्रम

बस्ती बस्ती, परवत परबत गाता जाये बंजारा
लेकर दिल का इकतारा

—साहिर

अश्कों में जो पाया है वो गीतों में दिया है
इस पर भी सुना है कि ज़माने को गिला है

जो तार से निकली है वो धुन सबने सुनी है
जो साज पे गुज़री है वो किस दिल को पता है

हम फूल हैं औरों के लिए लाए हैं खुश्बू
अपने लिए ले दे के बस इक दाग मिला है

भरम तेरी वफ़ाओं को मिटा देते तो क्या होता
तेरे चेहरे से हम पर्दा उठा देते तो क्या होता

मोहब्बत भी तिजारत हो गई है इस ज़माने में
अगर ये राज़ दुनिया को बता देते तो क्या होता

तेरी उम्मीद पर जीने से हासिल कुछ नहीं, लेकिन
अगर यूं भी न दिल को आसरा देते तो क्या होता

○

किसको खबर थी, किसको यक़ीं था, ऐसे भी दिन आएंगे
जीना भी मुश्किल होगा और मरने भी ना पाएंगे

हम जैसे बर्बाद दिलों का जीना क्या और मरना क्या
आज तेरी महफ़िल से उठे, कल दुनिया से उठ जाएंगे

तदवीर से विगडी हुई तकदीर वना ले
अपने पे भरोसा है तो यह दाव लगा ले

डरता है जमाने की निगाहो से भला क्या
इन्साफ तेरे साथ है इल्जाम उठा ले

क्या खाक वह जीना है जो अपने हो लिए हो
खुद मिट के किसी और को मिटने से वचा ले

टूटे हुए पतवार हैं किश्ती के तो गम क्या
हारी हुई वांहो को ही पतवार वना ले

तुम न जाने किस जहां में खो गए
हम भरी दुनिया में तनहा हो गए

मौत भी आती नहीं
आस भी जाती नहीं
दिल को ये क्या हो गया
कोई शै भाती नहीं

एक जां और लाख ग़म
घुट के रह जाए न दम
आओ तुम को देख लें
डूबती नज़रों से हम

तुम न जाने किस जहां में खो गए
हम भरी दुनिया में तनहा हो गए

☆ ☆

जीवन के सफर में राही
मिलते हैं बिछुड़ जाने को
और दे जाते हैं यादें
तनहाई में तड़पाने को

रो-रो के इन्ही राहों में खोना पड़ा इक अपने को
हंस-हंस के इन्ही राहों में अपनाया था 'बेगाने' को

अब साथ न गुज़रेंगे हम, लेकिन ये फ़िज़ा वादी की
दोहराती रहेगी बरसों, भूले हुए अफ़साने को

तुम अपनी नई दुनिया में, खो जाओ पराये बनकर
जी पाए तो हम जी लेंगें, मरने की सज़ा पाने को

ये वहारों का समां चांद तारों का समां
खो न जाए, आ भी जा

आस्मां से रंग वनकर वह रही है चांदनी
बेज़वानी की ज़वां से कह रही है चांदनी
जागती रुत नागहां
सो न जाए, आ भी जा

रात के हमराह ढलती जा रही है ज़िन्दगी
शम्मअ् की सूरत पिघलती जा रही है ज़िन्दगी
रोशनी वुझकर धुआं
हो न जाए, आ भी जा

आ ज़रा हंसकर निगाहों में निगाहें डाल दे
देर की तरसी हुई वांहों में वाहें डाल दे
हसरतों का कारवां
खो न जाए, आ भी जा

ये वहारों का समां चांद तारों का समां
खो न जाए आ भी जा

जिन्दगानी दर्द बन जाए कहीं ऐसा न हो
सांस आहे-सर्द बन जाए कहीं ऐसा न हो
दिल तड़प कर नागहां
सो न जाए, आ भी जा

आ किसी की ज़िन्दगी से खेलना अच्छा नहीं
बेबसों की बेबसी से खेलना अच्छा नहीं
रूह जल जलकर धुआं
हो न जाए, आ भी जा

क्या हुआ क्यों इस तरह तूने निगाहें फेर ली
मेरी राहों की तरफ से अपनी राहें फेर ली
ज़िन्दगी का कारवां
खो न जाए, आ भी जा

★ ★

उन्हें खोकर, दुखे दिल की दुआ से और क्या मांगूं
मैं हैरां हूं कि आज अपनी वफ़ा से और क्या मांगूं

गिरेबां चाक है, आंखों में आंसू, लब पे आहें हैं
यही काफ़ी है, दुनिया की हवा से और क्या मांगूं

मेरी बर्बादियों की दास्तां उन तक पहुँच जाए
सिवा इसके मोहब्बत के खुदा से और क्या मांगूं

○

बोल न बोल ऐ जाने वाले ! सुन तो ले दीवानों की
अब नहीं देखी जाती हमसे ये हालत अरमानों की

हुस्न के खिलते फूल हमेशा बेदर्दों के हाथ बिके
और चाहत के मतवालों को धूल मिली वीरानों की

दिल के नाज़ुक जज़्बों पर भी राज है सोने चांदी का
ये दुनिया क्या कीमत देगी सादादिल इन्सानों की ?

पिघला है सोना दूर गगन पर, फैल रहे है शाम के साये

खामोशी कुछ बोल रही है
भेद अनोखे खोल रही है

पंख पखेरू, सोच में गुम हैं
पेड़ खड़े है सीस झुकाए

धुंधले धुंधले मस्त नज़ारे
उड़ते बादल, मुड़ते धारे
छुपके नज़र से जाने ये किसने
रंग रंगीले खेल रचाए

कोई भी उसका राज न जाने
एक हक़ीक़त लाख फ़साने
एक ही जल्वा शाम सवेरे
भेस बदलकर सामने आए

☆ ★

उमर खैयाम—

ये मौसम, ये हवा, ये रुत सुहानी फिर न आएगी
अरे ओ जीने वाले! ज़िन्दगानी फिर न आएगी
कोई हसरत न रख दिल में, ये दुनिया चार दिन की है
जवानी मौजे-दरिया है, जवानी फिर न आएगी

नर्तकी—

निगाहें मिला, और इक जाम ले ले
जवानी के सर कोई इल्ज़ाम ले ले
गुनाहों के साये में पलती है जन्नत
हसीनों के हमराह चलती है जन्नत
हसीनों के पहलू में आराम ले ले
जवानी के सर कोई इल्ज़ाम ले ले

उमर खैयाम—

मुकद्दर का लिखा मिटता नहीं आंसू बहाने से
ये वो होनी है जो होकर रहेगी हर बहाने से
अगर जीने की ख्वाहिश है तो मस्तों की तरह जी ले
कि महफिल होश की सूनी पड़ी है इक ज़माने से

नर्तकी—

मचलती उमंगें कहीं सो न जाएं
ये सुबहें ये शामें, यूं ही खो न जाएं
कोई सुबह ले ले, कोई शाम ले ले
जवानी के सर कोई इल्ज़ाम ले ले

जाएं तो जाएं कहां
समझेगा कौन यहां
दर्द भरे दिल की जबां
जाएं तो जाएं कहां ?

मायूसियों का मजमआ है जी में
क्या रह गया है इस जिन्दगी में

रूह में गम, दिल मे धुआं
जाएं तो जाएं कहा ?

उनका भी गम है अपना भी गम है
अब दिल के बचने की उम्मीद कम है

एक किश्ती, सौ तूफां
जाएं तो जाएं कहां ?

★ ★

ग़म क्यों हो ?
जीने वालों को जीते जी मरने का ग़म क्यों हो ?
शोख़ लबों पर आहें क्यों हों, आंखों में नम क्यों हो ?

आज अगर गुलशन में कली खिलती है तो कल मुरझाती है
फिर भी खुलकर हंसती है और हंस के चमन महकाती है
ग़म क्यों हो ?

कल का दिन किसने देखा है, आज का दिन हम खोएं क्यों
जिन घड़ियों में हंस सकते हैं, उन घड़ियों में रोएं क्यों
ग़म क्यों हो ?

गाए जा मस्ती के तराने, ठंडी आहें भरना क्या ?
मौत आई तो मर भी लेंगे, मौत से पहले मरना क्या ?
ग़म क्यों हो ?

सुरमई रात है, सितारे हैं
आज दोनों जहां हमारे है
सुबह का इन्तज़ार कौन करे ?

फिर ये रुत, ये समां मिले न मिले
आरज़ू का चमन खिले न खिले
वक्त का एतवार कौन करे
सुबह का इन्तज़ार कौन करे ?

ले भी लो हम को अपनी बांहों में
रूह बेचैन है निगाहों मे
इल्तिजा बार-बार कौन करे
सुबह का इन्तजार कौन करे ?

मस्तियां दिल पे छाई जाती है
धड़कनें डगमगाई जाती हैं
अब हमें होशियार कौन करे
सुबह का इन्तज़ार कौन करे ?

★ ★

नज़र से दिल में समाने वाले, मेरी मोहब्बत तेरे लिए है
वफ़ा की दुनिया में आने वाले, वफ़ा की दौलत तेरे लिए है

खड़ी हूं मैं तेरे रास्ते में, जवां उमीदों के फूल लेकर
महकती ज़ुल्फ़ों, बहकती नज़रों की, गर्म जन्नत तेरे लिए है

सिवा तेरी आरज़ू के इस दिल में कोई भी आरज़ू नहीं है
हर एक जज़्बा, हर एक धड़कन, हर एक हसरत तेरे लिए है

मेरे ख़याल के नर्म पर्दों से, झांककर मुस्कराने वाले!
हज़ार ख्वाबों से जो सजी है, वह इक हक़ीक़त तेरे लिए है

मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी
मुझको रातों की सियाही के सिवा कुछ न मिला

मैं वह नग़्मा हूं जिसे प्यार की महफ़िल न मिली
वह मुसाफ़िर हूं जिसे कोई भी मंज़िल न मिली

ज़ख्म पाए हैं, बहारों की तमन्ना की थी
मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी।

किसी गेसू, किसी आंचल का सहारा भी नहीं
रास्ते में कोई धुंधला-सा सितारा भी नहीं

मेरी नज़रों ने नज़ारों की तमन्ना की थी
मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी।

दिल में नाकाम उमीदों के बसेरे पाए
रोशनी लेने को निकला तो अंधेरे पाए

रंग और नूर के धारों की तमन्ना की थी
मैंने चाद और सितारों की तमन्ना की थी।

(२)

मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी
मुझको रातों की सियाही के सिवा कुछ न मिला

मेरी राहों से जुदा हो गईं राहें उनकी
आज बदली नज़र आती हैं निगाहें उनकी

जिनसे इस दिल ने सहारों की तमन्ना की थी
मैंने चांद और सितारो की तमन्ना की थी।

प्यार मांगा तो सिसकते हुए अरमान मिले
चैन चाहा तो उमड़ते हुए तूफ़ान मिले

डूबते दिल ने किनारों की तमन्ना की थी
मैंने चांद और सितारों की तमन्ना की थी।

ज़ोर लगा के—हैय्या
पैर जमा के—हैय्या
जान लड़ा के—हैय्या

आंगन में बैठी है मछेरन तेरी आस लगाए
अरमानों और आशाओं के लाखों दीप जलाए
भोला बचपन रस्ता देखे ममता खैर मनाए
जोर लगाकर खेंच मछेरे, ढील न आने पाए;

जोर लगा के—हैय्या
पैर जमा के—हैय्या
जान लड़ा के—हैय्या

जनम-जनम से अपने सर पर तूफानों के साये
लहरें अपनी हमजोली हैं और बादल हमसाये
जल और जाल है जीवन अपना, क्या सर्दी क्या गर्मी
अपनी हिम्मत कभी न टूटे रुत आए रुत जाए

ज़ोर लगा के—हैय्या
पैर जमा के—हैय्या
जान लड़ा के—हैय्या

क्या जाने कब सागर उमड़े, कब बरखा आ जाए
भूख सरों पर मंडराए, मुंह खोले पर फैलाए
आज मिला, सो अपनी पूंजी कल की हाथ पराये
तनी हुई बांहों से कह दो लोच न आने पाए;

जो़र लगा के—हैय्या
पैर जमा के—हैय्या
जान लड़ा के—हैय्या

ऐ दिल जवां न खोल, सिर्फ़ देख ले
किसी से कुछ न बोल, सिर्फ़ देख ले

ये हसीन जगमगाहटें
आंचलों की सरसराहटें

ये नशे में झूमती ज़मीं
सब के पाव चूमती ज़मीं
किस क़दर है गोल, सिर्फ़ देख ले
ऐ दिल ज़बां न खोल, सिर्फ़ देख ले

कितना सच है कितना झूठ है
कितना हक़ है कितनी लूट है
रख सभी की लाज, कुछ न कह
क्या है ये समाज, कुछ न कह

ढोल का ये पोल, सिर्फ़ देख ले
ऐ दिल ज़बां न खोल, सिर्फ़ देख ले

मान ले जहां की बात को
दिन समझ ले काली रात को
चलने दे यूंही ये सिलसिला
ये न बोल, किसको क्या मिला

तराज़ुओं का झोल, सिर्फ़ देख ले
ऐ दिल ज़बां न खोल सिर्फ़ देख ले।

अब वो करम करें कि सितम, मैं नशे में हूँ
मुझको न कोई होश न गम, मैं नशे में हूँ

सीने से बोझ उनके गमों का उतार के
आया हूँ आज अपनी जवानी को हार के
कहते हैं डगमगाते कदम, मैं नशे में हूँ।

वो बेवफा है, अब भी यह दिल मानता नहीं
कमबख्त नासमझ है उन्हे जानता नहीं
मैं आज तोड़ दूंगा भरम, मैं नशे में हूँ।

फ़ुर्सत नहीं है रोने रुलाने के वास्ते
आए न उनकी याद सताने के वास्ते
इस वक़्त दिल का दर्द है कम, मैं नशे में हूँ।

☆☆

हर चीज़ ज़माने की जहां पर थी, वहीं है
इक तू ही नहीं है !

नज़रें भी वही और नज़ारे भी वही हैं
खामोश फ़िज़ाओं के इशारे भी वही हैं
कहने को तो सब कुछ है, मगर कुछ भी नहीं है

हर अश्क में खोई हुई खुशियों की झलक है
हर सांस में बीती हुई घड़ियों की कसक है
तू चाहे कहीं भी हो, तेरा दर्द यहीं है

हसरत नहीं, अरमान नहीं, आस नहीं है
यादों के सिवा कुछ भी मेरे पास नहीं है
यादें भी रहें या न रहें, किसको यक़ीं है ?

जिसे तू क़बूल कर ले, वह अदा कहां से लाऊं ?
तेरे दिल को जो लुभा ले वह सदा कहां से लाऊं?

मैं वह फूल हूँ कि जिसको गया हर कोई मसल के
मेरी उम्र वह गई है मेरे आंसुओं में ढल के
जो बहार बन के बरसे, वह घटा कहां से लाऊं ?

तुझे और की तमन्ना, मुझे तेरी आरज़ू है
तेरे दिल में गम ही ग़म है मेरे दिल में तू ही तू है
जो दिलों को चैन दे दे, वह दवा कहां से लाऊं ?

मेरी बेबसी है ज़ाहिर, मेरी आहे-बेअसर से
कभी मौत भी जो मांगी तो न पाई उसके दर से
जो मुराद ले के आए वह दुआ कहां से लाऊं ?

★★

आंख खुलते ही तुम छुप गए हो कहां
—तुम अभी थे यहां

मेरे पहलू में तारों ने देखा तुम्हें
भीगे भीगे नज़ारों ने देखा तुम्हें
तुमको देखा किए यह ज़मीं, आस्मां
—तुम अभी थे यहां

अभी सांसों की खुश्बू हवाओं में है
अभी क़दमों की आहट फ़िज़ाओं में है
अभी शाखों पे हैं उंगलियों के निशां
—तुम अभी थे यहां

तुम जुदा हो के भी मेरी राहों में हो
गर्म अश्कों में हो, सर्द आहों में हो
चांदनी में झलकती हैं परछाइयां
—तुम अभी थे यहां

तुमने कितने सपने देखे, मैंने कितने गीत बुने
इस दुनिया के शोर में लेकिन दिल की धड़कन कौन सुने?

सरगम की आवाज़ पे सर को धुनने वाले लाखों पाए
नग़्मों की खिलती कलियों को चुनने वाले लाखों पाएं

राख हुआ दिल जिनमें जलकर वो अंगारे कौन चुने
तुमने कितने सपने देखे, मैंने कितने गीत बुने ?

अरमानों के सूने घर में हर आहट बेगानी निकली
दिल ने जब नज़दीक से देखा, हर सूरत अनजानी निकली

बोझल घड़ियां गिनते-गिनते, सदमे हो गए लाख गुने
तुमने कितने सपने देखे, मैंने कितने गीत बुने ?

आज सजन मोहे अंग लगा लो, जन्म सफल हो जाए
हृदय की पीड़ा, देह की अगनी, सब शीतल हो जाए

किए लाख जतन
मेरे मन की तपन, मोरे तन की जलन नहीं जाए
कैसी लागी यह लगन
कैसी जागी यह अगन, जिया धीर धरन नहीं पाए
प्रेम सुधा इतनी बरसा दो, जग जल—थल हो जाए

आज सजन मोहे अंग लगा लो जन्म सफल हो जाए

कई जुगों से हैं जागे
मोरे नैन अभागे, कहीं जिया नहीं लागे बिन तोरे
सुख दीखे नहीं आगे
दुख पीछे पीछे भागे, जग सूना सूना लागे बिन तोरे
प्रेम सुधा इतनी बरसा दो, जग जल—थल हो जाए

आज सजन मोहे अंग लगा लो, जन्म सफल हो जाए

मोहे अपना बना लो, मोरी बांह पकड़

मैं हूं जन्म जन्म की दासी।

मोरी प्यास बुझा दो, मनहर, गिरधर

मैं हूँ अंतरघट तक प्यासी

प्रेम सुधा इतनी बरसा दो, जग जल—थल हो जाए

आज सजन मोहे अंग लगा लो, जन्म सफल हो जाए

★★

जाने वो कैसे लोग थे जिनके प्यार को प्यार मिला
हमने तो जब कलियां मांगीं कांटों का हार मिला

खुशियों की मंज़िल ढूँढ़ी तो ग़म की गर्द मिली
चाहत के नग़मे चाहे तो आहे-सर्द मिली
दिल के बोझ को दूना कर गया, जो ग़मख़्वार मिला

बिछुड़ गया हर साथी देकर पल दो पल का साथ
किस को फ़ुर्सत है जो थामे दीवानों का हाथ
हमको अपना साया तक अक्सर बेज़ार मिला

इसको ही जीना कहते हैं तो यों ही जी लेंगे
उफ़ न करेंगे लब सी लेंगे, आंसू पी लेंगे
ग़म से अब घबड़ाना कैसा ? ग़म सौ बार मिला

रात के राही थक मत जाना, सुबह की मंज़िल दूर नहीं

धरती के फैले आंगन में पल दो पल है रात का डेरा
ज़ुल्म का सीना चीर के देखो झाक रहा है नया सवेरा
ढलता दिन मजबूर सही, चढ़ता सूरज मजबूर नहीं

सदियों तक चुप रहने वाले, अब अपना हक़ लेके रहेंगे
जो करना है खुल के करेंगे, जो कहना है साफ़ कहेंगे
जीते-जी घुट-घुटकर मरना, इस युग का दस्तूर नहीं

टूटेंगी बोझिल ज़ंजीरें, जागेंगी सोई तक़दीरें
लूट पे कब तक पहरा देंगी, ज़ंग लगी खूनी शमशीरें ?
रह नही सकता इस दुनिया में, जो सबको मंज़ूर नही

★ ★

' साथी हाथ बढ़ाना—
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना
—साथी हाथ बढ़ाना

हम मेहनत वालों ने जब भी मिलकर क़दम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फ़ौलादी हैं सीने अपने, फ़ौलादी हैं बांहें
हम चाहें तो पैदा कर दें चट्टानों में राहें
—साथी हाथ बढ़ाना

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल ग़ैरों की ख़ातिर की, आज अपनी ख़ातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
—साथी हाथ बढ़ाना

एक से एक मिले तो क़तरा बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा बन जाता है सहरा
एक से एक मिले तो राई बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इन्सां बस में कर ले क़िस्मत
—साथी हाथ बढ़ाना

माटी से हम लाल निकालें, मोती लाएं जल से
जो कुछ इस दुनिया में बना है, बना हमारे बल से
कब तक मेहनत के पैरों में दौलत की जंजीरें ?
हाथ बढ़ाकर छीन लो अपने ख्वाबों की तावीरें

—साथी हाथ बढ़ाना

★ ★

प्रेमी—हम आपकी आंखों में इस दिल को बसा दें तो ?
प्रेमिका—हम मूंद के पलकों को इस दिल को सज़ा दें तो ?

प्रेमी—इन ज़ुल्फ़ों में गूंधेंगे हम फूल मोहब्बत के
प्रेमिका—ज़ुल्फ़ों को झटकर हम, ये फूल गिरा दें तो ?
प्रेमी— हम आपको ख़्वाबों में ला ला के सताएंगे
प्रेमिका—हम आपकी आंखों से नींदें ही उड़ा दें तो ?

प्रेमी—हम आपके क़दमों पर गिर जाएंगे ग़श खाकर
प्रेमिका—इस पर भी न हम अपने आंचल की हवा दें तो ?

• मौत कभी भी मिल सकती है लेकिन जीवन कल न मिलेगा
मरने वाले! सोच-समझ ले, फिर तुझको यह पल न मिलेगा

कौन-सा ऐसा दिल है जहां में जिसको ग़म का रोग नहीं
कौन-सा ऐसा घर है कि जिसमे सुख ही सुख है सोग नहीं.

जो हल दुनिया भर को मिला है क्यों तुझको वह हल न मिलेगा
मरने वाले! सोच-समझ ले, फिर तुझको यह पल न मिलेगा

इस जीवन में कितने ही दुख हों लेकिन सुख की आस तो है
दिल मे कोई अरमा तो बसा है, आख मे कोई प्यास तो है

जीवन ने यह फल तो दिया है मौत से यह भी फल न मिलेगा
मरने वाले! सोच-समझ ले, फिर तुझको यह पल न मिलेगा

जाने क्या तूने कही
जाने क्या मैंने सुनी
बात कुछ बन ही गई

सनसनाहट ही हुई
थरथराहट सी हुई
जाग उठे ख्वाब कई
बात कुछ बन ही गई

नैन झुक झुक के उठे
पांव रुक रुक के उठे
आ गई चाल नई
बात कुछ बन ही गई

ज़ुल्फ़ शाने पे मुड़ी
एक ख़ुशबू सी उड़ी
खुल गए राज़ कई
बात कुछ बन ही गई

इन उजले महलों के तले
हम गंदी गलियों में पले

सौ सौ बोझे मन पे लिए
मैल और माटी तन पे लिए

सुख सहते ग़म खाते रहे
फिर भी हंसते गाते रहे
हम दीपक तूफ़ां में जले
हम गन्दी गलियों में पले

दुनिया ने ठुकराया हमें
रस्तों ने अपनाया हमें
सड़कें मां, सड़कें ही पिता
सड़कें घर, सड़कें ही चिता

क्यों आए क्या करके चले
हम गंदी गलियों में पले

दिल में खटका कुछ भी नहीं
हमको परवा कुछ भी नहीं
चाहो तो नाकारा कहो
चाहो तो आवारा कहो

हम ही बुरे तुम सब हो भले
हम गन्दी गलियों में पले

यह महलों, यह तख्तों, यह ताजों की दुनिया
यह इन्सां के दुश्मन समाजों की दुनिया
यह दौलत के भूखे रिवाजो की दुनिया
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

हर एक जिस्म घायल, हर इक रूह प्यासी
निगाहों में उलझन, दिलों में उदासी
यह दुनिया है या आलमे-बदहवासी
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

यहां इक खिलौना है इन्सां की हस्ती
यह बस्ती है मुर्दा-परस्तों की बस्ती
यहां पर तो जीवन से है मौत सस्ती
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

जवानी भटकती है बदकार बनकर
जवां जिस्म सजते है बाजार बनकर
यहां प्यार होता है ब्योपार बनकर
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

दिल में खटका कुछ भी नहीं
हमको परवा कुछ भी नहीं
चाहो तो नाकारा कहो
चाहो तो आवारा कहो

हम ही बुरे तुम सब हो भले
हम गन्दी गलियों में पले

यह महलों, यह तख्तों, यह ताजों की दुनिया
यह इन्सा के दुश्मन समाजों की दुनिया
यह दौलत के भूखे रिवाजों की दुनिया
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

हर एक जिस्म घायल, हर इक रूह प्यासी
निगाहों में उलझन, दिलों में उदासी
यह दुनिया है या आलमे-बदहवासी
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

यहां इक खिलौना है इन्सां की हस्ती
यह बस्ती है मुर्दा-परस्तों की बस्ती
यहां पर तो जीवन से है मौत सस्ती
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

जवानी भटकती है बदकार बनकर
जवां जिस्म सजते हैं बाजार बनकर
यहां प्यार होता है ब्योपार बनकर
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है !

यह दुनिया, जहां आदमी कुछ नह है
वफ़ा कुछ नहीं, दोस्ती कुछ नहीं है
जहां प्यार की क़द्र ही कुछ नहीं है
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है

जला दो इसे फूँक डालो यह दुनिया
मेरे सामने से हटा लो यह दुनिया
तुम्हारी है तुम ही सम्हालो यह दुनिया
यह दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है

दो बूंदें सावन की—
इक सागर की सीप में टपके और मोती बन जाए
दूजी गंदे जल में गिरकर अपना आप गंवाए
किसको मुजरिम समझे कोई, किसको दोष लगाए ?
—दो बूंदें सावन की

दो कलियां गुलशन की—
इक सेहरे के बीच गुंधे और मन ही मन इतराए
इक अर्थी की भेंट चढ़े और धूली में मिल जाए
किसको मुजरिम समझे कोई, किसको दोष लगाए ?
—दो कलियां गुलशन की

दो सखियां बचपन की—
इक सिंहासन पर बैठे और रूपमती कहलाए
दूजी अपने रूप के कारण गलियों में बिक जाए
किसको मुजरिम समझे कोई, किसको दोष लगाए ?
—दो सखियां बचपन की

★ ★

रात भर का है मेहमां अंधेरा
किसके रोके रुका है सवेरा

रात जितनी भी संगीन होगी
सुवह उतनी ही रंगीन होगी

ग़म न कर, गर हैं बादल घनेरा
किस के रोके रुका है सवेरा

लब पे शिकवा न ला अश्क पीले
जिस तरह भी हो कुछ देर जी ले

अब उखड़ने को है ग़म का डेरा
किस के रोके रुका है सवेरा

यूँ ही दुनिया में आकर न जाना
सिर्फ़ आँसू बहाकर न जाना

मुस्कराहट पे भी हक़ है तेरा
किस के रोके रुका है सवेरा

औरत ने जनम दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाज़ार दिया
जब जी चाहा मसला कुचला, जब जी चाहा दुतकार दिया

तुलती है कहीं दीनारों में, बिकती है कहीं बाजारों में
नंगी नचवाई जाती है, अय्याशों के दरबारों में
यह वह बेइज्ज़त चीज़ है जो बट जाती है इज्जतदारों में

मर्दों के लिए हर ज़ुल्म रवा, औरत के लिए रोना भी खता
मर्दों के लिए लाखों सेजें, औरत के लिए बस एक चिता
मर्दों के लिए हर ऐश का हक़, औरत के लिए जीना भी सज़ा

जिन सीनों ने इनको दूध दिया, उन सीनों का व्योपार किया
जिस कोख में इनका जिस्म ढला, उस कोख का कारोबार किया
जिस तनमें उगे कोंपल बनकर, उस तन को जलीलो-ख्वार किया

मर्दों ने बनाई जो रस्में, उनको हक़ का फर्मान कहा
औरत के ज़िन्दा जलने को कुर्बानी और बलिदान कहा
इस्मत के बदले रोटी दी और उसको भी एहसान कहा

संसार की हर इक बेशर्मी, गुरबत की गोद मे पलती है
चकलों ही में आकर रुकती है, फाकों से जो राह निकलती है
मर्दों की हवस है जो अकसर औरत के पाप में ढलती है

औरत संसार की क़िस्मत है फिर भी तक़दीर की हेटी है
अवतार पय्यम्बर जनती है फिर भी शैतान की वेटी है
यह वह वदक़िस्मत मां है, जो वेटों की सेज पे लेटी है

औरत ने जनम दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे वाज़ार दिया
जव जी चाहा मसला कुचला, जव जी चाहा दुतकार दिया

वह सुबह कभी तो आएगी
इन काली सदियों के सर से जब रात का आंचल ढलकेगा
जब दुख के बादल पिघलेंगे जब सुख का सागर छलकेगा
जब अम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नग़मे गाएगी

वह सुबह कभी तो आएगी
जिस सुबह की ख़ातिर जुग-जुग से हम सब मर-मर कर जीते हैं
जिस सुबह के अमृत की धुन में हम ज़हर के प्याले पीते हैं
इन भूखी प्यासी रूहों पर इक दिन तो करम फ़र्माएगी

वह सुबह कभी तो आएगी
माना कि अभी तेरे मेरे अरमानों की कीमत कुछ भी नहीं
मिट्टी का भी है कुछ मोल मगर इन्सानों की क़ीमत कुछ भी नहीं
इन्सानों की इज्ज़त जब झूठे सिक्कों में न तोली जाएगी

वह सुबह कभी तो आएगी
दौलत के लिए जब औरत की इस्मत को न बेचा जाएगा
चाहत को न कुचला जाएगा, ग़ैरत को न बेचा जाएगा
अपनी काली करतूतों पर जब यह दुनिया शर्माएगी

वह सुबह कभी तो आएगी

वीतेंगे कभी तो दिन आखिर, यह भूख के और बेकारी के
टूटेंगें कभी तो बुत आखिर, दौलत की इजारादारी के
जब एक अनोखी दुनिया की बुनियाद उठाई जाएगी

वह सुबह कभी तो आएगी
मजबूर बुढ़ापा जब सूनी राहों की धूल न फांकेगा
मासूम लड़कपन जब गंदी गलियों में भीख न मांगेगा
हक़ मांगने वालों को जिस दिन सूली न दिखाई जाएगी

वह सुबह कभी तो आएगी
फ़ाक़ों की चिताओं पर जिस दिन इन्सां न जलाए जाएंगे
सीनों के दहकते दोज़ख में अरमां न जलाए जाएंगे
यह नरक से भी गन्दी दुनिया, जब स्वर्ग बनाई जाएगी

वह सुबह कभी तो आएगी

(२)

वह सुबह हमीं से आएगी
जब धरती करवट बदलेगी, जब क़ैद से क़ैदी छूटेंगे
जब पाप-घरौंदे फूटेंगे, जब जुल्म के बन्धन टूटेंगे
उस सुबह को हम ही लाएंगे, वह सुबह हमीं से आएगी

वह सुबह हमीं से आएगी

मनहूस समाजी ढांचों में जब जुर्म न पाले जाएंगे
जब हाथ न काटे जाएंगे जब सर न उछाले जाएंगे
जेलों के बिना जब दुनिया की सरकार चलाई जाएगी

वह सुबह हमीं से आएगी
संसार के सारे मेहनतकश, खेतों से मिलों से निकलेंगे
बेघर, बेदर, बेबस इन्सां, तारीक बिलों से निकलेंगे
दुनिया अम्न और खुशहाली के फूलों से सजाई जाएगी

वह सुबह हमीं से आएगी !

★ ★

आस्मां पे है ख़ुदा और ज़मीं पे हम
आजकल वह इस तरफ़ देखता है कम

आजकल किसी को वह टोकता नहीं
चाहे कुछ भी कीजिए रोकता नहीं
हो रही है लूट मार फट रहे हैं बम
आस्मां पे है ख़ुदा और ज़मीं पे हम

किस को भेजे वह यहां ख़ाक छानने
इस तमाम भीड़ का हाल जानने
आदमी हैं अनगिनत देवता हैं कम
आस्मां पे है ख़ुदा और ज़मीं पे हम

इतनी दूर से अगर देखता भी हो
तेरे मेरे वास्ते क्या करेगा वो
ज़िन्दगी है अपने-अपने बाज़ुओं का दम
आस्मां पे है ख़ुदा और ज़मीं पे हम

☆☆

सांझ की लाली सुलग-सुलग कर बन गई काली धूल
आए न बालम बेदर्दी मैं चुनती रह गई फूल

रैन भई बोझल अंखियन में चुभने लागे तारे
देस में मैं परदेसन हो गई जब से पिया सिधारे

पिछले पहर जब ओस पड़ी और ठंडी पवन चली
हर करवट अंगारे बिछ गए सूनी सेज जली

दीप बुझे सन्नाटा टूटा बजा भोर का संख
बैरन पवन उड़ाकर ले गई परवानो के पंख

दो-गाना

प्रेमी—

कश्ती का ख़ामोश सफ़र है, शाम भी है तनहाई भी
दूर किनारे पर बजती है, लहरों की शहनाई भी
आज मुझे कुछ कहना है!

लेकिन ये शर्मीली निगाहें मुझको इजाज़त दें तो कहूं
खुद मेरी बेताब उमंगें थोड़ी फ़ुर्सत दें तो कहूं
आज मुझे कुछ कहना है!

प्रेमिका—

जो कुछ तुम को कहना है, वो मेरे ही दिल की बात न हो
जो है मेरे ख़्वाबों की मंज़िल, उस मंज़िल की बात न हो
कह भी दो जो कहना है!

प्रेमी—

कहते हुए डर सा लगता है, कहकर बात न खो बैठूं
यह जो ज़रा-सा साथ मिला है, यह भी साथ न खो बैठूं
आज मुझे कुछ कहना है!

प्रेमिका—

कब से तुम्हारे रस्ते में मैं फूल बिछाए बैठी हूं
कह भी जो चुको कहना है, मैं आस लगाए बैठी हूं
कह भी दो जो कहना है!

प्रेमी—

दिल ने दिल की बात समझ ली, अब मुंह से क्या कहना है
आज नहीं तो कल कह लेंगे, अब तो साथ ही रहना है

प्रेमिका— कह भी दो जो कहना है!
प्रेमी— छोड़ो, अब क्या कहना है!

★★

तू मेरे प्यार का फूल है कि मेरी भूल है, कुछ कह नहीं सकती
पर किसी का किया तू भरे, यह सह नहीं सकती

मेरी बदनामी तेरे साथ पलेगी
सुन सुन ताने मेरी कोख जलेगी

कांटों भरे हैं सब रास्ते, तेरे वास्ते जीवन की डगर में
कौन बनेगा तेरा आसरा, बेदर्द नगर में

पूछेगा कोई तो किसे बाप कहेगा
जग तुझे फेंका हुआ पाप कहेगा

बन के रहेगी शर्मिन्दगी, तेरी ज़िन्दगी, जब तक तू जिएगा
आज पिलाऊं तुझे दूध मैं, कल ज़हर पिएगा

एक रूपक :

[पर्दा उठने से पूर्व एक बहुत बड़े साईज़ का पैसा स्टेज की पिछली दीवार पर दिखाई देता है।]

एनाउंसर—

कहते है इसे पैसा बच्चों यह चीज़ बड़ी मामूली है
लेकिन इस पैसे के पीछे सब दुनिया रस्ता भूली है
इन्सां की बनाई चीज है यह, लेकिन इन्सान पे भारी है
हल्की-सी झलक इस पैसे की, धर्म और ईमान पे भारी है
यह झूठ को सच कर देता है और सच को झूठ बनाता है
भगवान नही पर हर घर मे भगवान की पदवी पाता है

इस पैसे के बदले दुनिया मे इन्सानों की मेहनत बिकती है
जिस्मों की हरारत बिकती है रूहों की शराफत बिकती है
सरदार खरीदे जाते है दिलदार खरीदे जाते है
मिट्टी के सही पर इससे ही अवतार खरीदे जाते है

इस पैसे की खातिर दुनिया में आबाद वतन बट जाते हैं
धरती टुकड़े हो जाती है लाशो के कफन बंट जाते है
इज्जत भी इससे मिलती है, ताअज़ीम भी इससे मिलती है
तहज़ीब भी इससे आती है, ताअ़लीम भी इससे मिलती है
कहते है इसे पैसा बच्चो !

हम आज तुम्हें इस पैसे का सारा इतिहास बताते हैं
जितने युग अब तक गुज़रे है, उन सबकी झलक दिखाते हैं

इक ऐसा वक़्त भी था जग में जब इस पैसे का नाम न था
चीज़ें चीज़ों से तुलती थीं, चीज़ों का कुछ भी दाम न था
इन्सान फ़क़त इन्सान था तब, इन्सान का मज़हब कुछ भी न था
दौलत,ग़ुरबत,इज़्ज़त,ज़िल्लत इन लफ़्ज़ों का मतलब कुछ भी न था

○

[कुछ लोग जंगली लिबास में स्टेज पर आते हैं। किसीके
कंधे पर मरा हुआ हिरन है तो किसीके हाथों में
कोई दूसरा जानवर। स्टेज पर वे मिलकर
नाचते-गाते हैं और एक-दूसरे से अपनी
चीज़ों का तबादला करते हैं।]

चीज़ों से चीज़ बदलने का यह ढंग बहुत बेकार सा था
लाना भी कठिन था चीज़ों का ले जाना भी दुश्वार-सा था
इन्सानों ने तब मिलकर सोचा क्यों वक़्त इतना बर्बाद करें
हर चीज़ की जो क़ीमत ठहरे वह चीज़ न क्यों ईजाद करें
इस तरह हमारी दुनिया में पहला पैसा तैयार हुआ
और इस पैसे की हसरत में इन्सान ज़लीलो-ख्वार हुआ

○

[जागीरदारी का ज़माना—एक राजा बड़ा जागीरदार अपने
दरबारियों व मंत्रियों के बीच बैठा है]

पैसे वाले इस दुनिया में जागीरों के मालिक बन बैठे
मज़दूरों और किसानों की तक़दीरों के मालिक बन बैठे
जागीरों पे क़ब्ज़ा रखने को कानून बने हथियार बने
हथियारों के बल पर धन वाले इस धरती के सरदार बने
जंगों में लड़ाया भूखों को और अपने सिर पर ताज रखा
निर्धन को दिया परलोक का सुख अपने लिए जग का राज रखा

पंडित और मुल्ला इनके लिए मजहब के सहीफ़े लाते रहे
शायर तारीफ़ें लिखते रहे गायक दरबारी गाते रहे

[राग दरबारी का आलाप । कुछ औरतें और मर्द कंधों पर हल और कुदाल रखे दाखिल होते हैं ।]

कोरस—वैसा ही करेंगे हम जैसा तुम्हें चाहिए
पैसा हमें चाहिए

एक आवाज़— हल तेरे जोतेंगे
खेत तेरे बोएंगे
ढोर तेरे हांकेंगे
बोझ तेरा ढोएंगे
पैसा हमें चाहिए

किसान बच्चे— पैसा हमें दे दे राजा
गुण तेरे गाएंगे
तेरे बच्चे-बच्चियों की
खैर मनाएंगे
पैसा हमें चाहिए

[कुछ बच्चों को भीख मिल जाती है, बाकियों को निराश लौटना पड़ता है ।]

○

[मशीनी युग—शहर, मिलें, कारखाने, पूंजीपति]

लोगों की अनथक मेहनत ने चमकाया रूप जमीनों का
भाप और बिजली हमराह लिए आ पहुचा दौर मशीनों का
इल्म और विज्ञान की ताकत ने मुह मोड़ दिया दरियाओं का
इन्सान जो खाक का पुतला था वह हाकिम बना हवाओं का
जनता की मेहनत के आगे कुदरत ने खजाने खोल दिए
राजों की तरह रखा था जिन्हें, वो सारे जमाने खोल दिए

लेकिन इन सब ईजादों पर पैसे का इजारा होता रहा
दौलत का नसीबा चमक उठा, मेह्नत का मुक़द्दर सोता रहा

[कुछ औरत और मर्द मशीनी युग के औज़ार लेकर पूंजीपतियों
के सामने आते हैं।]

कोरस—वैसा ही करेंगे हम जैसा तुम्हें चाहिए
पैसा हमें चाहिए

एक आवाज़— रेलें भी बिछाएंगे
मिलें भी चलाएंगे
जंगों में भी जाएंगे
जानें भी गंवाएंगे

मज़दूर बच्चे— पैसा हमें दे दे बाबू
गुण तेरे गाएंगे
तेरे बच्चे-बच्चियों की
खैर मनाएंगे
पैसा हमें चाहिए

[कुछ बच्चों को भीख मिल जाती है। बाकियों को निराश
लौटना पड़ता है।]

एनाउंसर—

जुग-जुग से यों ही इस दुनिया में हम दान के टुकड़े मांगते हैं
हल जोत के फ़सलें काट के भी पकवान के टुकड़े मांगते हैं
लेकिन इन भीख के टुकड़ों से कब भूख का संकट दूर हुआ
इन्सान सदा दुख झेलेगा गर खत्म न यह दस्तूर हुआ
ज़ंजीर बनी है क़दमों की, वह चीज़ें जो पहले गहना थी
भारत के सपूतो! आज तुम्हें बस इतनी बात ही कहना थी
जिस वक़्त बड़े हो जाओ तुम, पैसे का राज मिटा देना
अपना और अपने जैसों का जुग-जुग का क़र्ज़ चुका देना

यह देश है वीर जवानों का
अलबेलों का मस्तानों का
इस देश का यारो क्या कहना, यह देश है दुनिया का गहना।

यहां चौड़ी छाती वीरों की
यहा भोली शक्लें हीरों की
यहां गाते हैं रांझे मस्ती में, मचती है धूमें बस्ती में

पेड़ों पे बहारें झूलों की
राहों में कतारें फूलों की
यहा हंसता है सावन बालों मे, खिलती हैं कलिया गालो मे

कहीं दंगल शोख जवानों के
कहीं करतब तीरकमानों के
यहां नित-नित मेले सजते हैं, नित ढोल और ताशे बजते हैं

दिलबर लिए दिलदार हैं हम
दुश्मन के लिए तलवार हैं हम
मैदा मे अगर हम डट जाएं, मुश्किल है कि पीछे हट जाएं

★ ★

न तो कारवां की तलाश है, न तो राहवर की तलाश है

मेरे शौक़े ख़ाना खराब को, तेरी रहगुज़र की तलाश है

—मेरे ना मुराद जुनून का है इलाज कोई तो मौत है
जो दवा के नाम पै ज़हर दे उसी चारागर की तलाश है

—तेरा इश्क़ है मेरी आरज़ू, तेरा इश्क़ है मेरी आबरू
तेरा इश्क़ मैं कैसे छोड़ दूँ, मेरी उम्र भर की तलाश है
दिल इश्क़, जिस्म इश्क़ है, और जान इश्क़ है
ईमान की जो पूछो तो ईमान इश्क़ है
तेरा इश्क़ मैं कैसे छोड़ दूँ, मेरी उम्र भर की तलाश है

—वहशते दिल रस्नो—दार से रोकी न गई
किसी खंजर किसी तलवार से रोकी न गई
इश्क़ मजनूँ की वो आवाज़ है जिस के आगे
कोई लैला किसी दीवार से रोकी न गई
यह इश्क़ इश्क़ है—

—वो हँस के अगर मांगें तो हम जान भी दे दें
ये जान तो क्या चीज़ है ईमान भी दे दें

—इश्क़ आज़ाद है, हिन्दू न मुसलमान है इश्क़
आप ही धर्म है और आपही ईमान है इश्क़

जिस से आगाह नहीं शेख—ओ—बरहमन दोनों
इस हकीकत का गरजता हुआ ऐलान है इश्क

—इश्क न पुच्छे दीन धरम नूं, इश्क न पुच्छे जातां
इश्क दे हत्थो गर्म लहु विच डुबियां लक्ख बरातां
यह इश्क इश्क है

—जब जब कृष्ण की बंसी बाजी निकली राधा घर से
जान अजान का भेद भुला के लोकलाज को तज के
बन-बन डोली जनक दुलारी पहन के प्रेम की माला
दर्शन जल की प्यासी मीरा पी गई विष का प्याला
यह इश्क इश्क है

—अल्लाह और रसूल का फ़र्मान इश्क है
यानी हदीस इश्क है क़ुरान इश्क है
गौतम का और मसीहा का अरमान इश्क है
ये कायनात इश्क है और जान इश्क है
इश्क सरमद, इश्क ही मन्सूर है
इश्क मूसा, इश्क कोहेतूर है
खाक को बुत और बुत को देवता करता है इश्क
इन्तिहा ये है कि बंदे को खुदा करता है इश्क
यह इश्क इश्क है

★ ★

आज क्यों हम से पर्दा है ?
तेरा हर रंग हमने देखा है
तेरा हर ढंग हमने देखा है
हाथ खेले हैं तेरी ज़ुल्फ़ों से
आंख वाक़िफ़ है तेरे जल्वों से
तुझ को हर तरह आज़माया है
पाके खोया है खो के पाया है
अंखड़ियों का बयां समझते हैं
धड़कनों की ज़बां समझते हैं
चूड़ियों की खनक से वाक़िफ़ हैं
छागलों की छनक से वाक़िफ़ हैं
नाज़ो अंदाज़ जानते हैं हम
तेरा हर राज़ जानते हैं हम
आज क्यों हम से पर्दा है ?

मुंह छिपाने से फ़ायदा क्या है
दिल दुखाने से फ़ायदा क्या है
उलझी-उलझी लटें संवार के आ
हुस्न को और भी निखार के आ
नर्म गालों में बिजलियां लेकर
शोख आंखों में तितलियां लेकर
आ भी जा अब अदा से लहराती
एक दुल्हन की तरह शर्माती
तू नहीं है तो रात सूनी है

इश्क़ की कायनात सूनी है
मरने वालों की जिन्दगी तू है
इस अंधेरे की रोशनी तू है
आज क्यों हम से पर्दा है ?

आ तेरा इन्तजार कब से है
हर नज़र बेकरार कब से है
शम्मा रह-रह के झिलमिलाती है
सांस तारों की डूबी जाती है
तू अगर मेहरबान हो जाए
हर तमन्ना जवान हो जाए

आ भी जा अब कि रात जाती है
एक आशिक की बात जाती है
खैर हो तेरी जिन्दगानी की
भीख दे दे हमें जवानी की
तुझ पे सौ जान से फिदा हम हैं
एक मुद्दत से आशना हम हैं
आज क्यो हम से पर्दा है ?

★ ★

तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

अच्छा है अभी तक तेरा कुछ नाम नहीं है
तुझको किसी मज़हब से कुछ काम नहीं है
जिस इल्म ने इन्सान को तक़सीम किया है
उस इल्म का तुझ पर कोई इल्ज़ाम नहीं है
तू बदले हुए वक़्त की पहचान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

मालिक ने हर इन्सान को इन्सान बनाया
हमने उसे हिन्दू या मुसलमान बनाया
क़ुदरत ने तो बख्शी थी हमें एक ही धरती
हमने कहीं भारत, कहीं ईरान बनाया
जो तोड़ दे हर बंद, वह तूफ़ान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

नफ़रत जो सिखाए वह धर्म तेरा नहीं है
इन्सान को रौंदे वह क़दम तेरा नहीं है
क़ुरान न हो जिसमें वह मंदिर नहीं तेरा
गीता न हो जिसमें वह हरम तेरा नहीं है

तू अम्न और सुलह का अरमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

ये दीन के ताजिर, ये वतन बेचने वाले
इन्सानों की लाशों के कफ़न बेचने वाले
ये महलों में बैठे हुए क़ातिल, ये लुटेरे
कांटों के इवज़ रूह-ए-चमन बेचने वाले
तू उनके लिए मौत का सामान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

अच्छा है अभी तक तेरा कुछ नाम नहीं है
तुझको किसी मज़हब से कुछ काम नहीं है
जिस इल्म ने इन्सान को तक़सीम किया है
उस इल्म का तुझ पर कोई इल्ज़ाम नहीं है
तू बदले हुए वक़्त की पहचान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

मालिक ने हर इन्सान को इन्सान बनाया
हमने उसे हिन्दू या मुसलमान बनाया
क़ुदरत ने तो बख्शी थी हमें एक ही धरती
हमने कहीं भारत, कहीं ईरान बनाया
जो तोड़ दे हर बंद, वह तूफ़ान बनेगा
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा

नफ़रत जो सिखाए वह धर्म तेरा नहीं है
इन्सान को रौंदे वह क़दम तेरा नहीं है
क़ुरान न हो जिसमें वह मंदिर नहीं तेरा
गीता न हो जिसमें वह हरम तेरा नहीं है

मैंने शायद तुम्हें पहले भी कभी देखा है !

अजनबी-सी हो मगर ग़ैर नहीं लगती हो
वहम से भी हो नाज़ुक वह यक़ीं लगती हो
हाय यह फूल-सा चेहरा ये घनेरी ज़ुल्फ़ें
मेरे शे'रों से भी तुम मुझको हसीं लगती हो

देखकर तुमको किसी रात की याद आती है
एक ख़ामोश मुलाक़ात की याद आती है
ज़ह्न पे हुस्न की ठंडक का असर जागता है
आँच देती हुई बरसात की याद आती है

मेरी आंखों में झुकी रहती हैं पलकें जिसकी
तुम वही मेरे ख़्यालों की परी हो कि नहीं
कहीं पहले की तरह फिर तो न खो जाओगी
जो हमेशा के लिए हो, वह ख़ुशी हो कि नहीं

मैंने शायद तुम्हें पहले भी कहीं देखा है !

जिन्दगी भर नही भूलेगी वह बरसात की रात
एक अनजान हसीना से मुलाकात की रात

हाय वो रेशमी जुल्फ़ों से बरसता पानी
फूल से गालों पे रुकने को तरसता पानी

दिल में तूफ़ान उठाते हुए जज्बात की रात
जिन्दगी भर नही भूलेगी वह बरसात की रात

डर के बिजली से अचानक वह लिपटना उसका
और फिर शर्म से बल खा के सिमटना उसका

कभी देखी न सुनी ऐसी तिलस्मात की रात
जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वह बरसात की रात

सुर्ख आंचल को दबाकर जो निचोड़ा उसने
दिल पे जलता हुआ इक तीर सा छोड़ा उसने

आग पानी में लगाते हुए लम्हात की रात
जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वह बरसात की रात

मेरे नग़्मों में जो बसती है वह तस्वीर थी वह
नौजवानी के हसीं ख्वाब की तअबीर थी वह

आस्मानों से उतर आई थी जो रात की रात
जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वह बरसात की रात

अपना दिल पेश करूं, अपनी वफ़ा पेश करूं
कुछ समझ में नहीं आता, तुझे क्या पेश करूं ?

तेरे मिलने की खुशी में कोई नग़मा छेड़ूं
या तेरे दर्द-ए-जुदाई का गिला पेश करूं ?

मेरे ख्वाबों में भी तू, मेरे ख्यालों में भी तू
कौन सी चीज़ तुझे तुझ से जदा पेश करूं ?

जो तेरे दिल को लुभा ले वह अदा मुझ में नहीं
क्यों न तुझ को कोई तेरी ही अदा पेश करूं ?

बच्चो ! तुम तक़दीर हो कल के हिन्दुस्तान की !
बापू के वरदान की, नेहरू के अरमान की !!

आज के टूटे खंडरों पर तुम कल का देश बसाओगे
जो हम लोगों से न हुआ, वह तुम करके दिखलाओगे
तुम नन्ही बुनियादें हो दुनिया के नये विधान की
बच्चो ! तुम तक़दीर हो कल के हिन्दुस्तान की

जो सदियों के बाद मिली है, वह आज़ादी खोए ना
दीन-धर्म के नाम पे कोई बीज फूट का बोए ना
हर मज़हब से ऊंची है कीमत इन्सानी जान की
बच्चो ! तुम तकदीर हो कल के हिन्दुस्तान की

फिर कोई 'जयचन्द' न उभरे फिर कोई 'जाफर' न उठे
ग़ैरों का दिल खुश करने को अपनों पे खंजर न उठे
धन दौलत के लालच में तौहीन न हो ईमान की
बच्चो ! तुम तक़दीर हो कल के हिन्दुस्तान की

बहुत दिनों तक इस दुनिया में रीत रही है जंगों की
लड़ी हैं धनवालों की खातिर फ़ौजें भूखे नंगों की
कोई लुटेरा ले न सके अब क़ुर्बानी इन्सान की
बच्चो ! तुम तक़दीर हो कल के हिन्दुस्तान की

नारी को इस देश ने देवी कहकर दासी जाना है
जिसको कुछ अधिकार न हो, वह घर की रानी माना है
तुम ऐसा आदर मत लेना, आड़ जो हो अपमान की
बच्चो ! तुम तक़दीर हो कल के हिन्दुस्तान की

रह न सके अब इस दुनिया में युग समर्यादारी का
तुमको झंडा लहराना है मेहनत की सरदारी का
मिल हों अब मज़दूरों के और खेती हो दहक़ान की
बच्चो ! तुम तक़दीर हो कल के हिन्दुस्तान की

संवाद-गीत

बच्चे— हमने सुना था एक है भारत
सब मुल्कों से नेक है भारत
लेकिन जब नज़दीक से देखा
सोच समझ कर ठीक से देखा
हमने नक्शे और ही पाए
बदले हुए सब तौर ही पाए
एक से एक की बात जुदा है
धर्म जुदा है ज़ात जुदा है
आप ने जो कुछ हम को पढ़ाया
वह तो कहीं भी नज़र न आया

अध्यापक— जो कुछ मैंने तुमको पढ़ाया
उसमें कुछ भी झूठ नहीं
भाषा से भाषा न मिले
तो इसका मतलब फूट नहीं
इक डाली पर रह कर
जब फूल जुदा है पात जुदा
बुरा नहीं गर यूँही वतन में
धर्म जुदा हो ज़ात जुदा

वही है जब क़ुर्रान का कहना
जो है वेद पुरान का कहना
फिर यह शोर-शराबा क्यों है
इतना ख़ून-ख़राबा क्यों है?

अध्यापक—सदियों तक इस देश में बच्चो!
रही हुकूमत ग़ैरों की
अभी तलक हम सबके मुंह पर
धूल है उनके पैरों की
'लड़वाओ और राज करो,'
यह उन लोगों की हिकमत थी
उन लोगों की चाल में आना
हम लोगों की ज़िल्लत थी
यह जो वैर है इक दूजे से
यह जो फूट और रंजिश है
उन्हीं विदेशी आक़ाओं की
सोची समझी बख़शिश है

बच्चे— कुछ इन्सान ब्रह्मन क्यों हैं?
कुछ इन्सान हरिजन क्यों हैं?
एक की इतनी इज्ज़त क्यों है?
एक की इतनी ज़िल्लत क्यों है?

अध्यापक— धन और ज्ञान को ताक़त वालों
ने अपनी जागीर कहा
मेहनत और ग़ुलामी
कमज़ोरों की तक़दीर
...ों का यह बटवारा

जो नफ़रत की शिक्षा दे
वह धर्म नहीं है, लानत है

जन्म से कोई नीच नहीं है
जन्म से कोई महान नहीं

करम से बढ़कर किसी मनुष्य की
कोई भी पहचान नहीं

बच्चे— ऊंचे महल बनाने वाले
फुटपाथों पर क्यों रहते हैं ?

दिन भर मेहनत करने वाले
फ़ाक़ों का दुख क्यों सहते हैं ?

अध्यापक— खेतों और मिलों पर अब तक
धन वालों का इजारा है

हमको अपना देश प्यारा,
उन्हें मुनाफ़ा प्यारा है

उनके राज में बनती है
हर चीज़ तिजारत की खातिर

अपने राज में बना करेगी
'सब' की ज़रूरत की खातिर

बच्चे— अब तो देश में आजादी है
अब क्यों जनता फ़रियादी है ?

कब जाएगा दौर पुराना ?
कब आएगा नया जमाना ?

पक—सदियों की भूख और बेकारी
क्या इक दिन में जाएगी ?
इस उजड़े गुलशन पर रंगत
आते आते आएगी

ये जो नये मन्वे हैं
ये जो नई तामीरें हैं
आने वाले दौर की कुछ
धुंधली-धुंधली तस्वीरें हैं

तुम ही रंग भरोगे इनमें
तुम ही इन्हें चमकाओगे
नवयुग आप नहीं आयेगा
नवयुग को तुम लाओगे !

☆ ☆

मैं जिन्दगी का साथ निभाता चला गया
हर फ़िक्र को धुंए में उड़ाता चला गया।

बरबादियों का सोग मनाना फ़िज़ूल था
बरबादियों का जश्न मनाता चला गया।

जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझ लिया
जो खो गया मैं उस को भुलाता चला गया

गम और खुशी में फर्क न महसूस हो जहां
मैं दिल को उस मक़ाम पे लाता चला गया

'कभी ख़ुद पे कभी हालात पे रोना आया
बात निकली तो हर इक बात पे रोना आया

हम तो समझे थे कि हम भूल गए हैं उनको
क्या हुआ आज यह किस बात पे रोना आया ?

किसलिए जीते हैं हम, किसके लिए जीते हैं ?
बारहा ऐसे सवालात पे रोना आया

कौन रोता है किसी और की खातिर, ऐ दोस्त !
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया

अभी न जाओ छोड़ कर कि दिल अभी भरा नहीं !

अभी अभी तो आई हो   बहार बन के छाई हो
हवा ज़रा महक तो ले   नज़र ज़रा बहक तो ले
ये शाम ढल तो ले ज़रा   ये दिल संभल तो ले ज़रा
मैं थोड़ी देर जी तो लूं   नशे के घूंट पी तो लूं
अभी तो कुछ कहा नहीं   अभी तो कुछ सुना नहीं
कि दिल अभी भरा नहीं !

सितारे झिलमिला उठे   चिराग़ जगमगा उठे
बस अब न मुझको टोकना   न बढ़ के राह रोकना
यही कहोगे तुम सदा   कि दिल अभी नहीं भरा
जो खत्म हो किसी जगह   ये ऐसा सिलसिला नहीं
कि दिल अभी भरा नहीं !

अधूरी आस छोड़ के   अधूरी प्यास छोड़ के
जो रोज यूंही जाओगी   तो किस तरह निभाओगी
कि जिन्दगी की राह में   जवां दिलों की चाह में
कई मक़ाम आयेंगे   जो हम को आजमायेंगे
बुरा न मानो बात का   ये प्यार है गिला नहीं
कि दिल अभी भरा नहीं !

हां में ऐसा कौन है कि जिस को ग़म मिला नहीं !

दुख और सुख के रास्ते, बने हैं सब के वास्ते
जो ग़म से हार जाओगे, तो किस तरह निभाओगे?
खुशी मिले हमें कि ग़म, जो होगा बांट लेंगे हम
मुझे तुम आज़माओ तो, जरा नज़र मिलाओ तो
ये जिस्म दो सही मगर दिलों में फ़ासला नहीं।

तुम्हारे प्यार की क़सम, तुम्हारा ग़म है मेरा ग़म
न यूं बुझे बुझे रहो जो दिल की बात है कहो
जो मुझसे भी छिपाओगे, तो फिर किसे बताओगे?
मैं कोई ग़ैर तो नहीं, दिलाऊं किस तरह यक़ीं
कि तुम से मैं जुदा नहीं हूँ, मुझ से तुम जुदा नहीं।

जहां में ऐसा कौन है कि जिस को ग़म मिला नहीं !

दुख और सुख के रास्ते, बने हैं सब के वास्ते
जो ग़म से हार जाओगे, तो किस तरह निभाओगे?
खुशी मिले हमें कि ग़म, जो होगा बांट लेंगे हम
मुझे तुम आज़माओ तो, ज़रा नज़र मिलाओ तो
ये जिस्म दो सही मगर दिलों में फ़ासला नहीं।

तुम्हारे प्यार की क़सम, तुम्हारा ग़म है मेरा ग़म
न यूँ बुझे बुझे रहो जो दिल की बात है कहो
जो मुझसे भी छिपाओगे, तो फिर किसे बताओगे?
मैं कोई ग़ैर तो नहीं, दिलाऊं किस तरह यक़ीं
कि तुम से मैं जुदा नहीं हूँ, मुझ से तुम जुदा नहीं।

ब भी अकेली होती हूँ तुम चुपके से आ जाते हो
झांक के मेरी आखों में बीते दिन याद दिलाते हो !

मस्ताना हवा के झोंकों से हर बार वह पर्दे का हिलना
पर्दे को पकड़ने की धुन में दो अजनबी हाथों का मिलना
ग्रांखों में धुआ सा छा जाना, सांसों में सितारे से खिलना

ड़ मुड़ के तुम्हारा रस्ते में तकना वह मुझे जाते जाते
और मेरा ठिठककर रुक जाना चिलमन के क़रीब आते आते
नज़रों का तरस कर रह जाना इक और झलक पाते पाते

बालों को सुखाने की खातिर कोठे पे वह मेरा आ जाना
और तुमको मुकाबल पाते ही कुछ शर्माना कुछ बल खाना
हमसायों के डर से कतराना, घर वालों के डर से घबराना।

बरसात के भीगे मौसम में, सर्दी की ठिठरती रातों में
पहरों वह यूंही बैठे रहना हाथों को पकड़ कर हाथों में
और लम्बी लम्बी घड़ियों का कट जाना बातों बातों में

रो-रो के तुम्हें खत लिखती हूँ और खुद पढ़कर रो लेत
हालात के तपते तूफा में, जज़्बात की कश्ती खेत
कैसे हो, कहां हो ? कुछ तो कहो, मैं तुमको सदाएं देत
मैं जब भी अकेली होत

★ ★

आज की रात मुरादों की बरात आई है !

आज की रात नहीं शिकवा-शिकायत के लिए
आज हर लम्हा, हर इक पल है मुहब्बत के लिए
रेशमी सेज है, महकी हुई तनहाई है
आज की रात मुरादों की बरात आई है

हर गुनाह आज मुकद्दस है फरिश्तों की तरह
कांपते हाथों को मिल जाने दो रिश्तों की तरह
आज मिलने में न उलझन है न रुस्वाई है
आज की रात मुरादों की बरात आई है

अपनी जुल्फें मेरे शाने पै बिखर जाने दो
इस हसीं रात को कुछ और निखर जाने दो
सुबह ने आज न आने की क़सम खाई है
आज की रात मुरादों की बरात आई है

मैं जब भी अकेली होती हूँ तुम चुपके से आ जाते हो
और झांक के मेरी आंखो में बीते दिन याद दिलाते हो !

मस्ताना हवा के झोंकों से हर बार वह पर्दे का हिलना
पर्दे को पकड़ने की धुन में दो अजनबी हाथों का मिलना
आंखों मे धुआं सा छा जाना, सांसों में सितारे से खिलना

मुड़ मुड़ के तुम्हारा रस्ते में तकना वह मुझे जाते जाते
और मेरा ठिठककर रुक जाना चिलमन के क़रीब आते आते
नज़रों का तरस कर रह जाना इक और झलक पाते पाते

बालों को सुखाने की खातिर कोठे पे वह मेरा आ जाना
और तुमको मुकाबल पाते ही कुछ शर्माना कुछ बल खाना
हमसायों के डर से कतराना, घर वालों के डर से घबराना।

बरसात के भीगे मौसम में, सर्दी की ठिठरती रातों में
पहरों वह यूंही बैठे रहना हाथों को पकड़ कर हाथों में
और लम्बी लम्बी घड़ियों का कट जाना बातों बातों में

रो-रो के तुम्हें खत लिखती हूँ और खुद पढ़कर रो लेती हूँ
हालात के तपते तूफां में, जज्बात की कश्ती खेती हूं
कैसे हो, कहां हो ? कुछ तो कहो, मैं तुमको सदाएं देती हूँ।
मैं जब भी अकेली होती हूँ—

★ ★

सलाम-ए-हसरत क़बूल कर लो
मेरी मुहब्बत क़बूल कर लो

उदास नज़रें तड़प-तड़प कर तुम्हारे जल्वों को ढूंढती हैं
जो ख्वाब की तरह खो गए उन हसीन लम्हों को ढूंढती हैं
अगर न हो नागवार तुमको तो यह शिकायत क़बूल कर लो
सलाम-ए-हसरत क़बूल कर लो।

तुम्हीं निगाहों की जुस्तजू हो, तम्हीं ख्यालों का मुद्दआ हो
तुम्हीं मेरे वास्ते सनम हो, तुम्हीं मेरे वास्ते ख़ुदा हो
मेरी परस्तिश की लाज रख लो, मेरी इबादत क़बूल कर लो
सलाम-ए-हसरत क़बूल कर लो।

तुम्हारी झुकती नज़र से जब तक न कोई पैग़ाम मिल सकेगा
न रूह तस्कीन पा सकेगी, न दिल को आराम मिल सकेगा
ग़म-ए-जुदाई है जानलेवा, यह इक हक़ीक़त क़बूल कर लो
सलाम-ए-हसरत क़बूल कर लो।

जो बात तुझ में है, तेरी तस्वीर मे नहीं !

रंगों में तेरा अक्स ढला, तू न ढल सकी
सांसों की आंच, जिस्म की खुशबु न ढल सकी
तुझ में जो लोच है, मेरी तहरीर में नहीं
तेरी तस्वीर में नहीं !

बेजान हुस्न में कहां रफ्तार की अदा
इनकार की अदा है न इकरार की अदा
कोई लचक भी जुल्फे गिरहगीर में नहीं
तेरी तस्वीर में नहीं !

दुनिया में कोई चीज नहीं है तेरी तरह
फिर एक बार सामने आ जा किसी तरह
क्या और इक झलक मेरी तकदीर मे नहीं ?
तेरी तस्वीर में नहीं !

पांव छू लेने दो फूलों को, इनायत होगी
वरना हमको नहीं, इनको भी शिकायत होगी

आप जो फूल विछाएं उन्हें हम ठुकराएं ?
हम को डर है कि ये तौहीने-मुहब्बत होगी

दिल की वेचैन उमंगों पै करम फर्माओ
इतना रुक रुक के चलोगी तो क़यामत होगी

शर्म रोके है इधर, शौक़ उधर खींचे है
क्या खवर थी कभी इस दिल की ये हालत होगी

शर्म ग़ैरों से हुआ करती है अपनों से नहीं
शर्म हम से भी करोगी तो मुसीवत होगी।

☆ ☆

जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा
रोके ज़माना, चाहे रोके खुदाई,
तुमको आना पड़ेगा

तरसती निगाहों ने आवाज़ दी है
मुहब्बत की राहों ने आवाज़ दी है
जाने हया, जाने अदा—छोड़ो तरसाना,
तुम को आना पड़ेगा

ये माना हमें जां से जाना पड़ेगा
पर ये समझ लो तुमने जब भी पुकारा,
हमको आना पड़ेगा

हम अपनी वफा पर न इल्ज़ाम लेंगे
तुम्हें दिल दिया है, तुम्हें जान देंगे
जब इश्क का सौदा किया, फिर कैसा घबड़ाना,
हमको आना पड़ेगा

★ ☆

ख़ुदाए बरतर ! तेरी ज़मीं पर ज़मीं की ख़ातिर ये जंग क्यों है?
हर एक फतह-ओ-ज़फर के दामन पै खूने-इंसां का रंग क्यों है?

ज़मीं भी तेरी है, हम भी तेरे, ये मिल्कियत का सवाल क्यों है
ये क़त्ल-ओ-ख़ूँ का रिवाज क्यों है, ये रस्मे जंग-ओ-जवाल क्यों है
जिन्हें तलब है जहान भर की, उन्हीं का दिल इतना तंग क्यों है?

ग़रीब माओं, शरीफ बहनों को अम्न-ओ-इज्ज़त की ज़िंदगी दे
जिन्हें अता की है तूने ताकत, उन्हें हिदायत की रोशनी दे
सरों में कब्र-ओ-ग़ुरूर क्यों है, दिलों के शीशे पै ज़ंग क्यों हैं ?

कज़ा के रस्ते पै जाने वालों को बच के आने की राह देना
दिलों के गुलशन उजड़ न जायें, मुहब्बतों को पनाह देना
जहां में अपने वफ़ा के बदले, ये जश्ने तीरो-तफंग क्यों है ?

इतनी हसीं, इतनी जवां रात क्या करें
जागे हैं कुछ अजीब से जज्बात क्या करें ?

पेड़ों के बाजुओं में लपकती है चांदनी
बेचैन हो रहे हैं ख्यालात क्या करें ?

सांसों में घुल रही है किसी सांस की महक
दामन को छू रहा है कोई, बात क्या करें ?

शायद तुम्हारे आने से ये भेद खुल सके
हैरान है कि आज नई बात क्या करें ?

ये वादियां, ये फ़िज़ाएं, बुला रही हैं तुम्हें
खामोशियों की सदाएं बुला रही हैं तुम्हें

तरस रहे हैं जवां फूल होंठ छूने को
मचल मचल के हवाएं बुला रही हैं तुम्हें

तुम्हारी ज़ुल्फों से खुशबू की भीक लेने को
झुकी झुकी सी घटाएं बुला रही हैं तुम्हें

हसीन चम्पई पैरों को जब से देखा है
नदी की मस्त अदाएं बुला रही हैं तुम्हें

मेरा कहा न सुनो, उनकी बात तो सुन लो
हर एक दिल की दुआएं बुला रही हैं तुम्हें

गुस्से में जो निखरा है, उस हुस्न का क्या कहना
कुछ देर अभी हमसे तुम यों ही खफा रहना।

इस हुस्न के शोले की तस्वीर बना लें हम
इन गर्म निगाहों को सीने मे लगालें हम
पल भर इसी आलम में ऐ जाने-अदा रहना
तुम यों ही ख़फ़ा रहना

ये दहका हुआ चेहरा, ये बिखरी हुई जुल्फें
ये बढ़ती हुई धड़कन, ये चढ़ती हुई साँसें
सामाने-कज़ा हो तुम, सामाने-कज़ा रहना
तुम यों ही ख़फ़ा रहना

पहले भी हसी थी तुम, लेकिन ये हक़ीक़त है
वो हुस्न मुसीबत था, ये हुस्न कयामत है
औरों से तो बढकर हो, खुद से भी सिवा रहना
तुम यों ही खफा रहना

★★

कौन आया कि निगाहों में चमक जाग उठी
दिल के सोए हुए तारों में खनक जाग उठी

किस के आने की ख़बर ले के हवाएं आई
जिस्म से फूल चटकने की सदाएं आई
रूह खिलने लगी, सांसों में महक जाग उठी

किसने मेरी नज़र देख के बाहें खोली
शोख जज़्बात ने सीने में निगाहें खोली
होठ तपने लगे, ज़ुल्फों में लचक जाग उठी

किस के हाथों ने मेरे हाथों से कुछ मांगा है
किस के ख्वाबों ने मेरे ख्वाबों से कुछ मांगा है
दिल मचलने लगा, आंचल में छनक जाग उठी

मुझे गले से लगालो बहुत उदास हूँ मैं
ग़मे-जहा से छुड़ालो बहुत उदास हूँ मैं

ये इंतजार का दुख, अब सहा नहीं जाता
तड़प रही है मुहब्बत, रहा नहीं जाता
तुम अपने पास बुलालो, बहुत उदास हूँ मैं।

हर एक सांस में मिलने की प्यास पलती है
सुलग रहा है बदन और रूह जलती है
बचा सको तो बचालो, बहुत उदास हूँ मैं।

भटक चुकी हूँ बहुत जिन्दगी की राहों में
मुझे अब आके छुपालो तुम अपनी बाहों में
मेरा सवाल न टालो, बहुत उदास हूँ मैं।

★ ★

जुर्मे उल्फ़त पे हमें लोग सज़ा देते हैं
कैसे नादान हैं, शोलों को हवा देते हैं

हम से दीवाने कहीं तर्के-वफ़ा करते हैं ?
जान जाए कि रहे वात निभा देते हैं

आप दौलत के तराज़ू में दिलों को तोलें
हम मुहव्वत से मुहव्वत का सिला देते हैं

तख्त क्या चीज़ है, और लाल-ओ-जवाहर क्या हैं
इश्क वाले तो ख़ुदाई भी लुटा देते हैं

हमने दिल दे भी दिया, अहदे-वफ़ा ले भी लिया
आप अव शौक़ से दे लें जो सज़ा देते हैं

• ये हुस्न मेरा ये इश्क तेरा, रंगीन तो है बदनाम सही
मुझ पर तो कई इल्जाम लगे, तुझ पर भी कोई इल्जाम सही

• इस रात की निखरी रंगत को कुछ और निखर जाने दे जरा
नज़रों को बहक लेने दे ज़रा, जुल्फों को बिखर जाने दे जरा
कुछ देर की ही तस्कीन सही, कुछ देर का ही आराम सही

जज़्बात की कलियां चुनना है, और प्यास का तोहफा देना है
लोगों की निगाहें कुछ भी कहें, लोगों से हमें क्या लेना है
ये खास तअल्लुक आपस का, दुनिया की नजर में आम सही

रुस्वाई के डर से घबड़ा कर, हम तर्के-वफा कब करते हैं
जिस दिल को बसालें पहलू में, उस दिल को जुदा कब करते हैं
जो हश्र हुआ है लाखों का, अपना भी वही अंजाम सही

★★

संसार से भागे फिरते हो, भगवान को तुम क्या पाओगे ?
इस लोक को भी अपना न सके, उस लोक में भी पछताओगे

ये पाप है क्या, ये पुण्य है क्या ? रीतों पै धरम की मुहरें हैं
हर युग में वदलते धर्मों को कैसे आदर्श बनाओगे ?

ये भोग भी एक तपस्या है, तुम त्याग के मारे क्या जानो
अपमान रचयिता का होगा, रचना को अगर ठुकराओगे

हम कहते हैं यह जग अपना है, तुम कहते हो झूठा सपना है
हम जन्म विता कर जायेंगे, तुम जन्म गंवा कर जाओगे ।

लागा चुनरी में दाग छुपाऊं कैसे ?
घर जाऊं कैसे ?

हो गई मैली मोरी चुनरिया
कोरे बदन सी कोरी चुनरिया
जाके बाबुल से नजरें मिलाऊं कैसे
—घर जाऊं कैसे ?

भूल गई सब वचन विदा के
खो गई मैं सुसराल में आके
जाके बाबुल से नजरें मिलाऊं कैसे
घर जाऊं कैसे ?

कोरी चुनरिया आत्मा मोरी, मैल है मायाजाल
वह दुनिया मोरे बाबुल का घर, ये दुनिया ससुराल
जाके बाबुल से नजरें मिलाऊं कैसे
घर जाऊं कैसे ?

लागा चुनरी में दाग छुपाऊं कैसे ?

तुम चली जाओगी परछाइयां रह जायेंगी
कुछ न कुछ हुस्न की रानाइयां रह जायेंगी

तुम कि इस झील के साहिल पै मिली हो मुझसे
जब भी देखूँगा यहीं मुझको नज़र आओगी
याद मिटती है न मंज़र कोई मिट सकता है
दूर जाकर भी तुम अपने को यहीं पाओगी

घुल के रह जायेगी झोंकों में बदन की खुशबू
ज़ुल्फ का अक्स घटाओं में रहेगा सदियों
फूल चुपके से चुरालेंगे लबों की सुर्ख़ी
ये जवां हुस्न फिज़ाओं में रहेगा सदियों

इस धड़कती हुई शादाब-ओ-हसीं वादी में
ये न समझो कि ज़रा देर का किस्सा हो तुम
अब हमेशा के लिए मेरे मुकद्दर की तरह
इन नज़ारों के मुकद्दर का भी हिस्सा हो तुम

तुम चली जाओगी परछाइयां रह जायेंगी
कुछ न कुछ हुस्न की रानाइयां रह जायेंगी

नग़मा-ओ-शेर की सौग़ात किसे पेश करूं
ये छलकते हुए जज़्बात किसे पेश करूं ?

शोख आखों के उजालों को लुटाऊं किस पर
मस्त जुल्फों की सियह् रात किसे पेश करूं ?

गर्म सासों में छुपे राज़ बताऊं किस को
नर्म होंठो मे दबी बात किसे पेश करूं ?

कोई हमराज तो पाऊं, कोई हमदम तो मिले
दिल की धड़कन के इशारात किसे पेश करूं?

रंग और नूर की बारात किसे पेश करूं
ये मुरादों की हसीं रात किसे पेश करूं ?

मैंने जज़्बात निभाए हैं असूलों की जगह
अपने अरमान पिरो लाया हूँ फूलों की जगह
तेरे सेहरे की ये सौग़ात किसे पेश करूं ?

ये मेरे शेर मेरे आखिरी नज़राने हैं
मैं उन अपनों में हूँ जो आज से बेगाने हैं
बेतअल्लुक़ सी मुलाक़ात किसे पेश करूं ?

सुर्ख़ जोड़े की तब-ओ-ताब मुबारक हो तुझे
तेरी आंखों का नया ख्वाब मुबारक हो तुझे
मैं ये ख्वाहिश, ये ख़यालात किसे पेश करूं ?

कौन कहता है कि चाहत पै सभी का हक़ है
तू जिसे चाहे तेरा प्यार उसी का हक़ है

मुझ से कहदे मैं तेरा हाथ किसे पेश करूं ?
रंग और नूर की बारात किसे पेश करूं ?

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी दिया
कनेडी सा जवां खूँ में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
इस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी ज़मीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की कसम
जिन पै जंगल का क़ानून भी थूक दे
ऐटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी वढ़ती हुई नस्ल खुद फूँक दे
ऐसी वदज़ात अपनी ही इक़ ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की वात है!

हम, तवाही के रस्ते पै इतना वढ़े
अव तवाही का रास्ता ही वाकी नहीं
खूने-इंसाँ जहाँ साग़रों में वटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की वारात है
ये न समझो कि ये आज की वात है!

ावे में रहो या काशी में, निस्बत तो उसी की जात से है
तुम राम कहो कि रहीम कहो, मतलब तो उसी की बात से है।

ये मस्जिद है वह बुतख़ाना, चाहे ये मानो चाहे वह मानो
मक़सद तो है दिल को समझाना, चाहे ये मानो चाहे वह मानो।

ये शेख़-ओ-ब्रह्मन के झगड़े, सब नासमझी की बातें हैं
हमने तो है बस इतना जाना, चाहे ये मानो चाहे वह मानो।

गर जज़्बे-मुहब्बत सादिक हो, हर दर से मुरादें मिलती हैं
हर घर है उसी का काशाना, चाहे ये मानो चाहे वह मानो

★ ★

वच्चे मन के सच्चे, सारे जग की आंख के तारे
ये वो नन्हे फूल हैं जो भगवान को लगते प्यारे

खुद रोयें खुद मन जायें, फिर हमजोली वन जाएं
झगड़ा जिसके साथ करें, अगले ही पल फिर वात करें
इन को किसी से वैर नहीं, इनके लिए कोई ग़ैर नहीं
इनका भोलापन मिलता है सव को वांह पसारे।

इंसां जव तक वच्चा है, तव तक समझो सच्चा है
ज्यों ज्यों उसकी उम्र वढ़े मन पर झूठ का मैल चढ़े
क्रोध वढ़े नफ़रत घेरे, लालच की आदत घेरे
वचपन इन पापों से हटकर अपनी उम्र गुज़ारे।

तन कोमल मन सुन्दर हैं, वच्चे वड़ों से वेहतर हैं
इनमें छूत और छात नहीं, झूटी ज़ात और पात नहीं
भाषा की तकरार नहीं मज़हव की दीवार नहीं
इन की नज़रों में इक हैं, मन्दिर-मस्जिद गुरुद्वारे।

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम
सब को सन्मति दे भगवान!

इस धरती पर बसने वाले
सब हैं तेरी गोद के पाले
कोई नीच न कोई महान
सब को सन्मति दे भगवान!

जातों, नस्लों के बटवारे
झूठ कहाएं तेरे द्वारे
तेरे लिए सब एक समान
सब को सन्मति दे भगवान!

जन्म का कोई मोल नहीं है
जन्म मनुष का तोल नहीं है
कर्म से है सब की पहचान
सब को सन्मति दे भगवान!

★★

हम तरक़्क़ी के रस्ते पै मीलों चले—इस तिरंगे तले
और आगे बढ़ेंगे अभी मन चले—इस तिरंगे तले

वो हमीं थे जो अपने वतन के लिए, सामराजी लुटेरों से टकरा गए
लब पै आज़ाद भारत का नारा लिये, चढ़के फांसी के तख़्तों पै लहरा गए
अपना हक़ अपने दुश्मन से लेकर टले
इस तिरंगे तले !

दीन और धर्म के फ़र्क़ को भूलकर, इक नए हिन्द की हमने तामीर की
जिसमें सबको बराबर सहूलत मिले ऐसी दुनिया बनाने की तदबीर की
इल्म-ओ-तहज़ीब के ख़्वाब फूले फले
इस तिरंगे तले !

जब भी सरहद पै ख़ूँख़ार लश्कर बढ़े, मुल्क की सालमियत को ललकारने
एक होकर सभी भारती चल पड़े, अपनी धरती पै जिस्म और जां वारने
तै हुए कैसे कैसे कठिन मरहले
इस तिरंगे तले !

हमने जागीरदारी को रुख़सत किया, अब ये सरमायादारी भी मिट जायगी
चंद हाथों में दौलत न रह पायगी, भूख बेरोज़गारी भी मिट जायगी
जाग उठे हैं दिलों में नए वलवले
इस तिरंगे तले !

अपनी मन्सूबाबंदी सलामत रहे, चोरबाजार वालों से निबटेंगे हम
आज संकट में है देश तो क्या हुआ, देश के सब सवालों से निबटेंगे हम
ऐसे संकट कई बार आकर टले
इस तिरंगे तले !

अम्न-ओ-इन्सानियत अपना आदर्श है, अपने आदर्श से मुँह न मोड़ेंगे हम
दर से कैसा भी तूफ़ान गुजरे मगर, जंगबाजों से रिश्ता न जोड़ेंगे हम
हम ये देखेंगे नेहरू की ज्योति जले
इस तिरंगे तले !

बाप का ख्वाब बेटी के हाथों पले
इस तिरंगे तले

★ ★

कोरस--

हम मज़दूर के साथ हैं, हम किसान के साथ हैं
वो जो हमारे साथ नहीं हैं, बोलो किसके साथ हैं ?

एक आवाज़—वो धनवान के साथ हैं !

हम कहते हैं देश के धन पर जनता का अधिकार बने
जिसमें ऊँच और नीच न हो ऐसा सुन्दर संसार बने

हम नवयुग की नई नस्ल के, नए ज्ञान के साथ हैं
वो जो हमारे साथ नहीं हैं बोलो किसके साथ हैं ?

एक आवाज़—वो अज्ञान के साथ हैं !

हम कहते हैं भारत का इतिहास लहू में ग़र्क़ न हो
ज़ातों, धर्मों, और नस्लों का इस धरती पै फ़र्क़ न हो

हम हर इक भारत वासी के धर्म-ईमान के साथ हैं
वो जो हमारे साथ नहीं हैं बोलो किसके साथ हैं ?

एक आवाज़—बेईमान के साथ हैं !

हम कहते हैं तोड़ के रख दो जोर इजारादारी का
कब तक जनता बोझ सहेगी, गुरबत और बेकारी का

हम मेहनत करने वाले भूखे इन्सान के साथ हैं
वो जो हमारे साथ नहीं हैं, बोलो किसके साथ हैं ?

एक आवाज :—वो पकवान के साथ हैं !

हम कहते हैं फस्ल खिले अब जनता के अरमानों की
मिलों पै मजदूरों का हक हो, खेती हो दहकानों की

हम इक बनते और संवरते हिन्दुस्तान के साथ हैं
वो जो हमारे साथ नहीं हैं बोलो किसके साथ हैं ?
वो जो हमारे साथ नही हैं बोलो किसके साथ हैं ?

एक आवाज :—वो श्मशान के साथ हैं।

धरती मां का मान, हमारा प्यारा लाल निशान !
नवयुग की मुस्कान, हमारा प्यारा लाल निशान

पूंजीवाद से दब न सकेगा, ये मज़दूर किसान का झंडा
मेहनत का हक़ लेके रहेगा, मेहनतकश इंसान का झंडा

इस झंडे से सांस उखड़ती चोर मुनाफ़ा खोरों की
जिन्होंने इन्सानों की हालत कर दी डंगर ढोरों की

फैक्टरियों के धूल-धुंए में हमने खुद को पाला
खून पिलाकर लोहे को इस देश का भार संभाला
मेहनत के इस 'पूजाघर' पर पड़ न सकेगा ताला
देश के साधन देश का धन हैं, जानले पूंजी वाला

जीतेगा मैदान, हमारा प्यारा लाल निशान !
धरती मां का मान, हमारा प्यारा लाल निशान !

गंगा तेरा पानी अमृत, झर झर बहता जाये
युग युग से इस देश की धरती तुझ से जीवन पाये

दूर हिमालय से तू आई गीत सुहाने गाती
परवत परवत, जंगल जंगल सुख सन्देश सुनाती
तेरी चांदी जैसी धारा मीलों तक लहराये

कितने सूरज उभरे डूबे, गंगा तेरे द्वारे
युगों युगों की कथा सुनाएं तेरे बहते धारे
तुझको छोड़ के भारत का इतिहास लिखा न जाय

इस धरती का दुख सुख तूने अपने बीच समोया
जब जब देश गुलाम हुआ है तेरा पानी रोया

जब जब हम आजाद हुए हैं तेरे तट मुस्काये
गंगा तेरा पानी अमृत, झर झर बहता जाये

× ×

पोंछ कर अश्क अपनी आंखों से, मुस्कराओ तो कोई वात वने
सर झुकाने से कुछ नहीं होगा, सर उठाओ तो कोई वात वने।

ज़िन्दगी भीख में नहीं मिलती, ज़िन्दगी वढ़ के छीनी जाती है
अपना हक़ संगदिल ज़माने से, छीन पाओ तो कोई वात वने।

रंग और नस्ल, ज़ात और मज़हव, जो भी हों आदमी से कमतर हैं
इस हक़ीक़त को तुम भी मेरी तरह, मान जाओ तो कोई वात वने।

नफ़रतों के जहान में हमको, प्यार की वस्तियां वसानी हैं
दूर रहना कोई कमाल नहीं, पास आओ तो कोई वात वने।

बरसो राम धड़ाके से
बुढ़िया मर गई फ़ाक़े से

कलजुग में भी मरती है, सतजुग में भी मरती थी
यह बुढ़िया इस दुनिया में सदा ही फ़ाके करती थी
जीना इसको रास न था
पैसा इसके पास न था
इसके घर को देख के लक्ष्मी मुड़ जाती थी नाके से
बरसो राम धड़ाके से !

झूठे टुकड़े खा के बुढ़िया, तपता पानी पीती थी
मरती है तो मरजाने दो, पहले भी कब जीती थी ?
जय हो पैसे वालों की
गेहूँ के दल्लालों की
इनका हद से बढ़ा मुनाफ़ा कुछ ही कम है डाके से
बरसो राम धड़ाके से !

★ ★

यों तो हुस्न हर जगह है, लेकिन इस क़दर नहीं
ऐ वतन की सरज़मीं !

ये खुली खुली फ़िज़ा ये धुला धुला गगन
नदियों के पेच-ओ-ख़म, पर्वतों का वांक पन
तेरी वादियां जवान, तेरे रास्ते हसीं
ऐ वतन की सरज़मीं !

तेरी खाक में बसी, मां के दूध की महक
तेरे रूप में रची, स्वर्गलोक की झलक
हम में ही कमी रही, तुझ में कुछ कमी नहीं
ऐ वतन की सरज़मीं !

नैमतों के दरमियां, भूख प्यास क्यों रहे ?
तेरे पास क्या नहीं ? तू उदास क्यों रहे ?
आम होगी वो खुशी, जो है अब कहीं कहीं
ऐ वतन की सरज़मीं !

तेरी खाक की क़सम हम तुझे सजायेंगे
हर छुपा हुआ हुनर रोशनी में लायेंगे
आने वाले दौर की बरकतों पे रख यक़ीं
ऐ वतन की सरज़मीं !

★ ★

• ये दुनिया दोरंगी है—
एक तरफ से रेशम ओढे, एक तरफ से नंगी है

• एक तरफ़ अंधी दौलत की पागल ऐश परस्ती
एक तरफ जिस्मों की क़ीमत रोटी से भी सस्ती
एक तरफ़ है सोनागाछी, एक तरफ चौरंगी है
ये दुनिया दोरंगी है !

आधे मुँह पर नूर बरसता, आधे मुँह पर चोरे
आधे तन पर कोढ़ के धब्बे, आधे तन पर हीरे
आधे घर में खुशहाली है, आधे घर में तंगी है
ये दुनिया दोरंगी है !

माथे ऊपर मुकुट सजाए, सर पर ढोए गंदा
दाएं हाथ से भिक्षा मांगे, वांए से दे चन्दा
एक तरफ़ भंडार चलाएं, एक तरफ भिखमंगी है
ये दुनिया दोरंगी है !

इक संगम पर लाती होगी, दुख और सुख की धारा
नए सिरे से करना होगा दौलत का बटवारा
जब तक ऊंच और नीच है बाकी, हर सूरत बेढगी है
ये दुनिया दोरंगी है !

★ ★

• वक्त से दिन और रात, वक्त से कल और आज
वक्त की हर शै गुलाम, वक्त का हर शै पे राज

• वक्त की पावन्द हैं आती जातीं रौनकें
वक्त है फूलों की सेज वक्त है कांटों का ताज

वक्त के आगे उड़ी कितनी तहज़ीवों की धूल
वक्त के आगे मिटे कितने मज़हव और रिवाज

वक्त की गर्दिश से है चांद तारों का निज़ाम
वक्त की ठोकर में हैं, क्या हुकूमत क्या समाज

आदमी को चाहिए वक्त से डर कर रहे
कौन जाने किस घड़ी वक्त का वदले मिज़ाज

• तोरा मन दरपन कहलाए—
भले बुरे सारे कर्मों को देखे और दिखाए
तोरा मन दरपन कहलाए !

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय
मन उजियारा जब-जब फैले, जग उजियारा होय
इस उजले दरपन पर प्राणी, धूल न जमने पाए
तोरा मन दरपन कहलाए !

सुख की कलियां, दुख के कांटे, मन सब का आधार
मन से कोई बात छिपे ना, मन के नैन हजार
जग से चाहे भाग ले कोई, मन से भाग न पाए
तोरा मन दरपन कहलाए !

★ ★

• किसी पत्थर की मूरत से मुहब्बत का इरादा है
परिस्तिश की तमन्ना है, इबादत का इरादा है।

जो दिल की धड़कनें समझे न आंखों की जुबां समझे
नज़र की गुफ़्तगू समझे न जज़्बों का बयां समझे
उसी के सामने उसकी शिकायत का इरादा है।

• सुना है हर जवां पत्थर के दिल में आग होती है
मगर जब तक न छेड़ो, शर्मगीं पर्दे में सोती है
ये सोचा है कि दिल की बात उसके रू-बरू कह दें
नतीजा कुछ भी निकले आज अपनी आरज़ू कह दें
हर इक बेजा तकल्लुफ से बग़ावत का इरादा है

मैंने देखा है कि फूलों से लदी शाखों में
तुम लचकती हुई यूं मेरे करीब आई हो
जैसे मुद्दत से यूंही साथ रहा हो अपना
जैसे अब की नहीं बरसों की शनामाई हो

मैंने देखा है कि गाते हुए झरनों के क़रीब
अपनी बेताबी—ए जज़्बात कही है तुम ने
कांपते होठों से, रुकती हुई आवाज़ के साथ
जो मेरे दिल में थी वह बात कही है तुम ने

आंच देने लगा क़दमों के तले बर्फ़ का फ़र्श
आज जाना कि मुहब्बत में है गर्मी कितनी
संग मरमर की तरह सख़्त बदन में तेरे
आ गई है मेरे छू लेने से नर्मी कितनी

हम चले जाते हैं और दूर तलक कोई नहीं
सिर्फ़ पत्तों के चटखने की सदा आती है
दिल में कुछ ऐसे ख़यालात ने करवट ली है
मुझ को तुम से नहीं अपने से हया आती है

★ ★

छू लेने दो नाज़ुक होंठों को, कुछ और नहीं है जाम है यह
क़ुदरत ने जो हम को बख्शा है, वो एक हसीन इनाम है यह

शर्मा के न यूंही खो देना रंगीन जवानी की घड़ियां
बेताब धड़कते सीनों का अरमान भरा पैग़ाम है यह

अच्छों को बुरा साबित करना दुनिया की पुरानी आदत है
इस मै को मुबारक चीज़ समझ, माना कि बहुत बदनाम है यह

दोहे

खुले गगन के पंछी घूमें डाली डाली
मैं क्या जानूं उड़ना क्या है मैं पिंजरे की पाली

○

गमले के इस फूल का जीवन, मेरी कथा सुनाए
इसी के अंदर खिले बिचारा, इसी में मुरझा जाए

○

शीशे के ताबूत में जैसे मछली माथा पटके
पत्थर के इस बंदी-घर में मेरी आतमा भटके

मैंने पी शराब, तुमने क्या पिया ? आदमी का खून !
मैं ज़लील हूँ
तुम को क्या कहूँ !

तुम पियो तो ठीक हम पियें तो पाप
तुम जियो तो पुण्य हम जिएँ तो पाप
तुम शरीफ़ लोग तुम अमीर लोग
हम तबाह हाल हम फ़क़ीर लोग
ज़िन्दगी भी रोग, मौत भी अजीब
मैंने पी शराब !

तुम कहो तो सच हम कहें तो झूठ
तुम को सब मुआफ़ ज़ुल्म हो कि लूट
तुमने कितने दिल चाक कर दिए
कितने बसते घर खाक कर दिए
मैंने तो किया, ख़ुद को ही खराब
मैंने पी शराब !

रीत और रिवाज सब तुम्हारे साथ
धर्म और समाज सब तुम्हारे साथ
अपने साथ क्या ? धूल और धुँआ
आज चाहे तुम नोंच लो ज़ुवां

आने वाला दौर लेगा सव हिसाव
मैंने पी शराव !

तुमने क्या पिया आदमी का खून
मैं ज़लील हूँ, तुमको क्या कहूं ?

• बांट के खाओ इस दुनिया में, बांट के बोझ उठाओ
जिस रस्ते में सच का सुख हो, वह रस्ता अपनाओ
इस तालीम से बढ़ कर जग में कोई नही तालीम
कह गए फादर इब्राहीम !

कुत्ते से क्या बदला लेना, गर कुत्ते ने काटा
तुम ने गर कुत्ते को काटा, क्या थूका क्या चाटा
तुम इसां हो यारो, अपनी कुछ्र तो करो ताज़ीम
कह गए फादर इब्राहीम !

झूठ के सर पर ताज भी हो तो झूठ का भांडा फोड़ो
सच चाहे सूली चढ़वादे सच का साथ न छोड़ो
कल वह सच अमृत होगा जो आज है कड़वानीम
कह गए फादर इब्राहीम !

विना सिफ़ारिश मिले नौकरी, विन रिश्वत हो काम
इसी को अनहोनी कहते हैं, इसी का कलयुग नाम

वतन का क्या होगा अंजाम ?
वचाले ऐ मौला, ऐ राम !

रिश्वत पर चलते थे चक्कर छोटे हों या मोटे
वंद हुई ये रस्म तो धंधे हो जायेंगे खोटे
घर घर में मातम होगा, दफ़्तर-दफ़्तर कुहराम
वचाले ऐ मौला, ऐ राम !

यही चला अव ढंग तो यारो होंगे वुरे नतीजे
भूखे मरेंगे नेताओं के वेटे और भतीजे
जितनी इज्ज़त वनी थी अव तक, सव होगी नीलाम
वचाले ऐ मौला, ऐ राम !

रिश्वत से मुंह वंद थे सव के, अव फूटेंगे भांडे
पता चलेगा किस के किससे मिले हुए थे डांडे
कौन सा ठेका लेकर किसने कितना माल वनाया
कितनी उजरत दी लोगों को कितना विल दिखलाया

कौन सी फ़ाइल किस दफ़्तर से कैसे हो गई चोरी
किसने कितनी ग़द्दारी की, कितनी भरी तिजोरी
किस मिल मालिक के पैसे ने कितने वोट कमाए
कुर्सी मिली तो देश भक्त ने कितने नोट कमाए ?
रिश्वत ही से छुपे हुए थे सब काले करतूत
नंगे हो कर सामने आयेंगे अब सभी सपूत

दुनिया भर के मुल्कों में होगा भारत बदनाम
बचाले ऐ मौला, ऐ राम !

अपने अंदर ज़रा झांक मेरे वतन
अपने ऐवों को मत ढांक मेरे वतन !

तेरा इतिहास है खून में लिथड़ा हुआ
तू अभी तक है दुनिया में पिछड़ा हुआ
तूने अपनों को अपना न माना कभी
तूने इंसां को इसां न जाना कभी
तेरे धर्मों ने ज़ातों की तक़सीम की
तेरी रस्मों ने नफ़रत की तालीम दी
वहशतो का चलन तुझ में जारी रहा
क़त्ल-ओ-ख़ूं का जुनूं तुझ पै तारी रहा
अपने अन्दर ज़रा झांक मेरे वतन !

तू द्राविड़ है या आर्य नस्ल है
जो भी है सब इसी ख़ाक की फ़स्ल है
रंग और नस्ल के दायरे से निकल
गिर चुका है वहुत देर, अव तो संभल
तेरे दिल से जो नफ़रत न मिट पायगी
तेरे घर में ग़ुलामी पलट आयेगी
तेरी वर्वादियों का तुझे वास्ता
ढूंढ अपने लिए अव नया रास्ता
अपने अंदर ज़रा झांक मेरे वतन !
अपने ऐवों को मत ढांक मेरे वतन !

मिलती है ज़िन्दगी में मुहब्बत कभी-कभी
होती है दिलवरों की इनायत कभी-कभी

शरमा के मुंह न फेर नज़र के सवाल पर
लाती है ऐसे मोड़ पै किस्मत कभी-कभी

खुलते नहीं हे रोज दरीचे वहार के
आती है जानेमन! ये क़यामत कभी-कभी

तनहा न कट सकेंगे जवानी के रास्ते
पेश आयेगी किसी की ज़रूरत कभी-कभी

फिर खो न जाएं हम कहीं दुनिया की भीड़ में
मिलती है पास आने की मोहलत कभी-कभी

★ ★

हर तरह के जज़्बात का ऐलान हैं आंखें
शबनम कभी, शोला कभी तूफान हैं आंखें

आंखों से बड़ी कोई तराज़ू नहीं होती
तुलता है बशर जिस में वो मीज़ान हैं आंखें

आंखें ही मिलाती हैं ज़माने में दिलों को
अनजान है हम तुम अगर अनजान है आंखें

लब कुछ भी कहें इस से हक़ीक़त नहीं खुलती
इन्सान के सच झूठ की पहचान हैं आंखें

आंखें न झुकें तेरी किसी ग़ैर के आगे
दुनिया में बड़ी चीज़ मेरी जान! हैं आंखें

दूर रह कर न करो बात, क़रीब आजाओ
याद रह जायेगी यह रात, क़रीब आ जाओ

एक मुद्दत से तमन्ना थी तुम्हें छूने की
आज बस में नहीं जज़्बात, क़रीब आजाओ

सर्द झोंकों से भड़कते हैं बदन में शोले
जान ले लेगी ये बरसात, क़रीब आजाओ

इस क़दर हम से झिझकने की ज़रूरत क्या है
ज़िन्दगी भर का है अब साथ, क़रीब आजाओ

नीले गगन के तले धरती का प्यार पले
ऐसे ही जग में आती हैं सुबहें, ऐसे ही शाम ढले
नीले गगन के तले !

शबनम के मोती फूलों पै बिखरें, दोनों की आस फले
बल खाती बेले, मस्ती में खेलें, पेड़ों से मिल के गले
नदिया का पानी दरिया से मिलकर, सागर की ओर चले
नीले गगन के तले
धरती का प्यार पले !

☆ ☆

तुम अपना रंज-ओ-ग़म, अपनी परेशानी मुझे दे दो
तुम्हें इन की क़सम, ये दुख ये हैरानी मुझे दे दो

मैं देखूँ तो सही, दुनिया तुम्हें कैसे सताती है?
कोई दिन के लिए अपनी निगहबानी मुझे दे दो

ये माना मैं किसी क़ाबिल नहीं हूँ इन निगाहों में
बुरा क्या है अगर इस दिल की वीरानी मुझे दे दो

वो दिल जो मैंने मांगा था मगर ग़ैरों ने पाया था
बड़ी शै है अगर इसकी पशेमानी मुझे दे दो

मन रे ! तू काहे न धीर धरे
वह निर्मोही मोह न जानें, जिन का मोह करे
मन रे ! तू काहे न धीर धरे

इस जीवन की चढ़ती ढलती धूप को किसने बांधा
रंग पँ किसने पहरे डाले, रूप को किसने बाधा
काहे ये जतन करे ?
मन रे ! तू काहे न धीर धरे

उतना ही उपकार समझ, कोई जितना साथ निभादे
जनम-मरन का मेल है सपना, ये सपना बिसरा दे
कोई ना संग मरे
मन रे ! तू काहे न धीर धरे

☆ ☆

घली आग से साग़र भरले
र मरना है आज ही मरले

अब न कभी ये रात ढलेगी, अब न कभी जागेगा सवेरा
सोच है किसकी,फ़िक्र है किसकी, इस दुनिया में कौन है तेरा ?
कोई नहीं जो तेरी खबर ले
पिघली आग से साग़र भरले

दरत अंधी, दुनिया बहरी
ले पड़ गए, ख्वाब सुनहरी
तोड़ भी दे उम्मीद का रिश्ता, छोड़ भी दे जज़्बात से लड़ना
आज नहीं तो कल समझेगा, मुश्किल है हालात से लड़ना
जो हालात करायें करले
पिघली आग से साग़र भरले

न्द है नेकी का दरवाज़ा
ाप उठाले अपना जनाज़ा
कोई नहीं जो बोझ उठाए, अपनी ज़िन्दा लाशों का
खतम भी करदे आज फ़साना, इन बेदर्द तमाशों का
जाने तमन्ना, जां से गुज़र ले
पिघली आग से साग़र भरले

★★

• हर वक़्त तेरे हुस्न का होता है समां और
हर वक़्त मुझे चाहिए अंदाजे-बयां और

फूलों सा कभी नर्म तो शोलों सा कभी गर्म
मस्ताना अदा में, कभी शोखी है कभी शर्म

हर सुबह गुमां और है, हर रात गुमा और
हर वक्त तेरे हुस्न का होता है समां और

भरने नही पाती तेरे जल्वों से निगाहें
थकने नही पाती तुझे लिपटाके ये बाहें

• छू लेने से होता है, तेरा जिस्म जवां और
हर वक्त तेरे हुस्न का होता है समां और

★ ★

संसार की हर शै का इतना ही फ़साना है
इक धुँध से आना है, इक धुँध में जाना है

ये राह कहां से है, ये राह कहां तक है ?
ये राज़ कोई राही समझा है न जाना है

इक पल की पलक पर है ठहरी हुई ये दुनिया
इक पल के झपकने तक हर खेल सुहाना है

क्या जाने कोई किस पर, किस मोड़ पे क्या बीते
इस राह में ऐ राही ! हर मोड़ बहाना है

☆ ☆

मिले जितनी शराब, मैं तो पीता हूं
रखे कौन ये हिसाब ? मैं तो पीता हूँ

इक इसान हूँ, मैं फ़रिश्ता नही
जो फ़रिश्ता बने उनसे रिश्ता नही

कहो अच्छा या खराब, मैं तो पीता हूँ
मिले जितनी शराब, मैं तो पीता हूँ

होश मुझ को रहे तो सितम घेर ले
कई दुख घेर ले, कई ग़म घेर ले

सहे कौन ये अज़ाब, मैं तो पीता हूँ
मिले जितनी शराब, मैं तो पीता हूँ

कोई अपना अगर हो तो टोके मुझे
मैं ग़लत कर रहा हूँ तो रोके मुझे

किसे देना है हिसाब ? मैं तो पीता हूँ
मिले जितनी शराब, मैं तो पीता हूँ

क्या मिलिए ऐसे लोगों से जिनकी फ़ितरत छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे

खुद से भी जो खुद को छिपाएं, क्या उनसे पहचान करें
क्या उनके दामन से लिपटें, क्या उनका अरमान करें

जिनकी आधी नीयत उभरे, आधी नियत छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए असली सूरत छिपी रहे

जिनके ज़ुलम से दुखी है जनता, हर बस्ती हर गांव में
दया-धर्म की बात करें वह, बैठ के सजी सभाओं में

दान का चर्चा घर घर पहुँचे, लूट की दौलत छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे

देखें इन नक़ली चेहरों की, कब तक जयजय कार चले
उजले कपड़ों की तह में, कब तक काला बाज़ार चले

कब तक लोगों की नज़रों से छिपी हक़ीक़त छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे

क्या मिलिए ऐसे लोगों से जिनकी फ़ितरत छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे

खुद से भी जो खुद को छिपाएं, क्या उनसे पहचान करें
क्या उनके दामन से लिपटें, क्या उनका अरमान करें

जिनकी आधी नीयत उभरे, आधी नियत छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए असली सूरत छिपी रहे

जिनके ज़ुल्म से दुखी है जनता, हर वस्ती हर गांव में
दया-धर्म की वात करें वह, वैठ के सजी सभाओं में

दान का चर्चा घर घर पहुँचे, लूट की दौलत छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे

देखें इन नक़ली चेहरों की, कव तक जयजय कार चले
उजले कपड़ों की तह में, कव तक काला वाज़ार चले

कव तक लोगों की नज़रों से छिपी हकीक़त छिपी रहे
नक़ली चेहरा सामने आए, असली सूरत छिपी रहे

मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं वता दूँ
तेरी ज़ुल्फ़ फिर संवारूं, तेरी मांग फिर सजा दूँ।

मुझे देवता वना कर तेरी चाहतों ने लूटा
मेरा प्यार कह रहा हैं मैं तुझे ख़ुदा वना दूँ।

कोई ढ़ूंढने भी आए तो हमें न ढूंढ पाए
मुझे तू कहीं छिपा दे, मैं तुझे कहीं छिपा दूँ।

मेरे वाज़ुओं में आकर तेरा दर्द चैन पाए
तेरे गेसुओं में छुप कर मैं जहां के ग़म भुला दूँ।

मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं वता दूँ
तेरी ज़ुल्फ़ फिर संवारूं, तेरी मांग फिर सजा दूं।

मुझे देवता वना कर तेरी चाहतों ने लूटा
मेरा प्यार कह रहा हैं मै तुझे ख़ुदा वना दूँ।

कोई ढूंढने भी आए तो हमें न ढूंढ पाए
मुझे तू कहीं छिपा दे, मैं तुझे कहीं छिपा दूँ।

मेरे वाज़ुओं में आकर तेरा दर्द चैन पाए
तेरे गेसुओं में छुप कर मैं जहां के ग़म भुला दूँ।

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख़्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी दिया
कनेडी सा जवां ख़ूं में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
इस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी ज़मीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की कसम
जिन पे जंगल का क़ानून भी थूक दे
ऐटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी बढ़ती हुई नस्ल खुद फूंक द
ऐसी बदज़ात अपनी ही इक ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हम, तबाही के रस्ते पे इतना बढ़े
अब तबाही का रास्ता ही बाक़ी नहीं
ख़ूने-इंसाँ जहाँ साग़रों में बटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की बारात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी दिया
कनेडी सा जवां खूँ में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
इस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी जमीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की कसम
जिन पै जंगल का क़ानून भी थूक दे
ऐटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी बढ़ती हुई नस्ल ख़ुद फूँक दे
ऐसी बदज़ात अपनी ही इक़ ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हम, तबाही के रस्ते पै इतना बढ़े
अब तबाही का रास्ता ही बाक़ी नहीं
खूने-इंसाँ जहाँ साग़रों में बटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की बारात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी दिया
कनेडी सा जवां खूँ में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
इस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी ज़मीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की कसम
जिन पै जंगल का क़ानून भी थूक दे
ऐटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी बढ़ती हुई नस्ल खुद फूँक दे
ऐसी बदज़ात अपनी ही इक़ ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हम, तबाही के रस्ते पै इतना बढ़े
अब तबाही का रास्ता ही बाकी नहीं
खूने-इंसाँ जहाँ साग़रों में बटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की बारात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख़्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी दिया
कनेडी सा जवां ख़ूं में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
इस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी ज़मीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की कसम
जिन पै जंगल का क़ानून भी थूक दे
ऐटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी बढ़ती हुई नस्ल ख़ुद फूंक दे
ऐसी वदज़ात अपनी ही इक़ ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की वात है!

हम, तवाही के रस्ते पै इतना बढ़े
अब तवाही का रास्ता ही वाकी नहीं
ख़ूने-इंसाँ जहाँ साग़रों में वटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की वारात है
ये न समझो कि ये आज की वात है!

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख़्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी किया
केनेडी सा जवां ख़ूं में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
उस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी ज़मीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की क़सम
जिन पै जंगल का क़ानून भी थूक दे
एटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी बढ़ती हुई नस्ल ख़ुद फूंक दे
ऐसी बदज़ात अपनी ही इक ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हम, तबाही के रस्ते पै इतना बढ़े
अब तबाही का रास्ता ही बाक़ी नहीं
ख़ूने-इंसाँ जहाँ साग़रों में बटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की बारात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

☆ ☆

हमने सुक़रात को ज़हर की भेंट दी
और मसीहा को सूली का तख़्ता दिया
हमने गांधी के सीने को छलनी दिया
कनेडी सा जवां ख़ूं में नहला दिया

हर मुसीबत जो इंसान पर आई है
इस मुसीबत में इंसान का हाथ है

हिरोशिमा की झुलसी ज़मीं की क़सम
नागा साकी की सुलगी फ़िज़ा की कसम
जिन पै जंगल का क़ानून भी थूक दे
ऐटमी दौर के वो दरिन्दे हैं हम

अपनी बढ़ती हुई नस्ल ख़ुद फूँक दे
ऐसी बदज़ात अपनी ही इक़ ज़ात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!

हम, तबाही के रस्ते पै इतना बढ़े
अब तबाही का रास्ता ही बाकी नहीं
ख़ूने-इंसाँ जहाँ सागरों में बटे
इस से आगे वो महफ़िल वो साक़ी नहीं
इस अंधेरे की इतनी ही औक़ात थी

इस से आगे उजालों की बारात है
ये न समझो कि ये आज की बात है!